॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 135 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अगस्त– 2019 30/–प्रति

गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019
जोधपुर आश्रम का विहंगम दृश्य

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 135 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अगस्त – 2019

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

योग का परम लक्ष्य मोक्ष है.....4
"गुरु" अजर अमर तत्त्व है (सम्पादकीय).....5
सद्गुरुदेव का प्रवचन.....6
Beginning of my Spiritual Life.....7
जीवन का महान् नियम.....8
आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है?.....9-10
सर्वोत्तम यज्ञ नाम (मंत्र) जप.....11
पूर्णता के लिए समग्र समर्पण–सद्गुरुदेव के प्रति.....12-13
योग के आधार.....14
योगियों की आत्मकथा.....15
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....16
अंतर्चेतना का विकास.....17
प्रधानमंत्री पद मुझे नहीं चाहिए! (कहानी).....18
चित्र पृष्ठ.....19-25
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति.....26-30
तारणकर्ता सद्गुरुदेव.....31
ज्ञान का लक्ष्य.....32
मनुष्य और विकास.....33
भगवान् की अवतरण–प्रणाली.....34
योग के बारे में.....35
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ.....36
सिद्धयोग.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

योग का परम लक्ष्य मोक्ष है, रोग ठीक करना नहीं

अब रोग भी खत्म हो रहे हैं, इसीलिए संसार बड़ा आकर्षित हो रहा है। ये बात भी सही हैं कि मेरे पास इस देश में 90 प्रतिशत लोग रोग के लिए आते हैं। मैं आपको बताऊँ कि योग क्या है ? रोग क्या है ?

योग के बारे में बड़ी भ्रांतियाँ है- पूरी दुनिया में। आज योग का कहीं वर्णन आएगा तो आपके दिमाग में एक ही बात आएगी कि कोई रोग है, इसको शारीरिक कसरत करवाई जाएगी। जबकि योग का संबंध रोग से है ही नहीं। इस वक्त का, "पतंजलि योग दर्शन" Authentic (प्रामाणिक) ग्रंथ है, उसको उठाकर देख लो। उसके 195 सूत्रों में कहीं भी रोग का वर्णन नहीं हैं। हमारा दर्शन तो मोक्ष की बात करता है और मोक्ष आज एक कल्पना की चीज है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

''गुरु'' अजर अमर तत्त्व है

गुरु-शिष्य मिलन का पावन पर्व गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई को देश विदेश में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस पावन पर्व की समस्त साधकों व पाठकवृन्द को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह एक ऐसी दिव्यता और नीरवता से भरपूर वेला होती है जब शिष्य अपनी श्रद्धा अपने सद्गुरुदेव भगवान् के पावन चरण कमलों में अर्पित करता है।

सद्गुरु की प्रसन्नता और उनकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करना ही एक परम शिष्य का परम कर्तव्य और अमर धन है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने 5 जून 2017 को अपनी भौतिक देह त्याग दी लेकिन पहले वे अपने प्रवचन में जो 'गुरु तत्त्व' के विषय में व्याख्यान देते थे, उनकी वह वाणी पूर्णतः सत्य साबित हो रही है। इस अंक में इसी बात पर लेखनी की गति आगे बढ़ेगी।

पूज्य सद्गुरुदेव के दिव्य शब्दों में-'' अब दो प्रकार से ये योग चल रहा है-एक तो नाथ सम्प्रदाय के संन्यासी वो श्वांस पर जोर देते हैं, वो हठयोगी कहलाते हैं। श्वांस को अन्दर खींच कर रोक लेते हैं। जब तक श्वांस रुका रहता है तो मन स्थिर रहता है, मगर ज्यों ही श्वांस चला कि मन चलायमान हो जाता है, उन नाथों की पार नहीं पड़ रही है। इसमें (सिद्धयोग में) गुरु मन को रोकता है **''गुरु'' क्या है? ये शरीर गुरु नहीं हो सकता, गुरु तो अजर-अमर है, अनादि-अनन्त है।** ये (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ब्रह्मलीन) नाथजी थे उनकी कृपा हो गई इसलिए ये परिवर्तन आ रहा है। गुरु तो वो थे मुझे तो आदेश है बाँटने का, बाँट रहा हूँ।

आपकी तरह गृहस्थी व्यक्ति हूँ और एक व्यवस्था चल रही है कि मेरे को ऊपर बिठा दिया, आप नीचे बैठ गए तो मैं महान् नहीं हो गया और आप छोटे नहीं हो गए। ये तो एक व्यवस्था शुरु से चली आ रही है। जो परिवर्तन मुझमें आया वो मानवमात्र में आएगा। मनुष्य-'मनुष्य' है। मैंने लाखों को ये परिवर्तन मूर्तरूप से करवाकर बता दिया। **'गुरु' में गुरुत्वाकर्षण होता** है, इसलिए गुरु का यहाँ (आज्ञाचक्र पर) ध्यान करवाया जाता है। अगर गुरु में गुरुत्वाकर्षण है तो मन रुक जाएगा और नहीं तो यदि प्रोफेसनल (व्यावसायिक) है तो फिर जीवन भर आँख बन्द किए बैठे रहो, गुरु को भेंट चढाते रहो, कुछ नहीं होना है।

मैं तो कह देता हूँ, दूसरा गुरु बदल लो। गुरु, रोक लगाता है मुझे यहाँ आकर पता लगा, दूसरा गुरु धारण करके पता नहीं क्या हो जाएगा, नरक में चला जाएगा द्रोह हो जाएगा? मैं तो मेरे शिष्यों को कहता हूँ-सौ गुरु और बना लो मुझे कोई परेशानी नहीं है। दो विद्या है-अपरा और परा। अपरा विद्या में पहली क्लास से लेकर एम ए तक कितने ही गुरु बदलते हैं, परा विद्या ये पैरासाईकोलॉजी है। इसमें भी गुरुओं की स्टेजेज (स्तर) अलग-अलग है तो रोक लगाने वाली बात मेरे समझ में नहीं आती है। मैं तो नहीं लगाता। मैं तो कहता हूँ, सौ गुरु और बना लो, मुझे कोई परेशानी नहीं है।

दतात्रेय जी ने कितने गुरु बनाए थे? इस प्रकार जो गुरु का ध्यान करता है, नाम जप चल रहा है तो इससे आगे आपकी (साधक) ड्यूटी खत्म। अब बताने वाले ने, जो बताया है, उसमें अगर सच्चाई है तो आगे का काम शुरु हो जाएगा और नहीं तो जीवन भर आँख बंद किये हुए बैठे रहो, कुछ नहीं होगा।

सद्गुरुदेव की ये अमर बातें आज फलीभूत हो रही है। गुरुदेव ने कहा था कि ''मेरा यह मिशन है, यह चलता रहेगा। मेरे मेरे भौतिक शरीर में रहने न रहने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।''

उनकी असीम कृपा से वर्तमान में गुरुदेव का मिशन चल रहा है। उनकी तस्वीर से ध्यान लग रहा है। लोगों को अद्भुत फायदा हो रहा है। रोगों व नशों से लोग मुक्त हो रहे हैं। हजारों लोग अपने अपने स्तर पर गुरुदेव का प्रचार-प्रसार कार्य भी कर रहे हैं।

जोधपुर मुख्यालय पर गुरु पूर्णिमा महोत्सव के दिन करीब 7-8 हजार लोगों ने सामूहिक रूप से संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान किया। असीम नीरवता और आनंद से भरपूर पल था।

जो माहोल सद्गुरुदेव के पावन सानिध्य में रहता था, वैसा ही अद्भुत पल गुरु पूर्णिमा पर्व पर महसूस हुआ।

इसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की शाखा कोटा का माहोल था। वहाँ पर भी दो हजार से ज्यादा साधकों ने भाग लिया। बाड़मेर, गंगापुरसिटी, डीडवाना, जामडोली (जयपुर), मुम्बई, मन्दसौर (म.प्र) बैंगलोर व शिमोगा (कर्नाटक) में भी गुरुदेव की पूजा-अर्चना कर सामूहिक ध्यान किया गया।

गुरु एक अजर अमर तत्त्व है, शिष्य जहाँ श्रद्धापूर्वक याद करता है, वह शक्ति उसकी समस्या का समाधान करती है, उनके साथ रहती है। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ध्यान करके गुरु तत्त्व के रहस्य को समझा जा ।

-संपादक

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

वृत्ति परिवर्तन

वृति बदल जाएगी तो देव और दानव का संघर्ष मनुष्य के अन्दर अनादि काल से चला आया है। दानव प्रभावी हो जाता है तो आदमी को यह नुकसान होता है। जब देव प्रभावी हो जाता है तो आदमी सात्विक हो जाता है। पातंजलि योग दर्शन में भी देखिए, केवल्य पाद के दूसरे सूत्र में जाति परिवर्तन की बात कही है। ऋषि ने जात्यान्तरण की बात स्वीकार की है। पहले-पहले कई लोग मुझे कहा कहते थे, यह रोग ऐसे ही ठीक हो जाते हैं तो अस्पताल बंद कर दे क्या? मैंने कहा भईया आपको इस दर्शन की जानकारी नहीं है, अधुरी जानकारी है, इसलिए कह रहे हो।

पातंजलि ऋषि ने केवल्य पाद के पहले-पहले सूत्र में इस परिवर्तन के आने के लिए पाँच कारण बताये हैं। पहला तो पूर्वजन्म के संस्कार से परिवर्तन आना संभव है। दूसरा जप से, तीसरा तप से, चौथा योग से, पाँचवाँ औषधि से भी यह परिवर्तन संभव है, पातंजलि ऋषि स्वीकार करते हैं। आज तो हम जो जहर खा रहे हैं, वो तो पश्चिम की देन है। भारतीय औषधि विज्ञान में तो कायाकल्प तक का वर्णन आता है। मगर वह दर्शन तो लोप हो गया।

हमारे पतन के काल के साथ वह सब लोप हो गया। मुस्लमानो ने, ईसाईयों ने वह ग्रंथ जला दिये। आज उसको उठने नहीं दे रहे हैं। आर्थिक कारणों से दबाए रख रहे हैं तो हमारा दर्शन तो पाँच तरह से इस परिवर्तन को स्वीकार करता है। औषधि से भी करता है तो इस प्रकार आप नाम जप और ध्यान करोगे तो आप में यह परिवर्तन आएगा।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

Since the chanting had been stopped completely, so gradually this state subsided and I again started living like a **normal person**. But a strangeness had come within my body that if my mind and heart **concentrated intensely on any goal of life,** the outcome was seen clearly like on a television much in advance and later the incident would happen exactly the way as it was revealed to me.

This way for about an year, I received countless proofs constantly and they all happened in the physical world exactly the way I had seen them.

"A bunch of words have this **strange might** and power, was beyond my imagination."

So out of curiosity, I thought of praying again. After deciding to pray to that **supreme power**, I started praying. Keeping a picture of **Lord Shri Krishna** in front just like Gayatri, I started chanting a 'beej mantra' of Krishna. I neither decided the total number of chants to be done nor any specific goal for this worship. Only out of curiosity to see when and what happens. The chanting continued for about two and a half to three years in the morning and evening in the same way as before. One day a thought came that the number of chants

done so far must be more than many hundred times of Gayatri mantra still haven't got any such realisation. The moment I thought so, a strange situation developed.

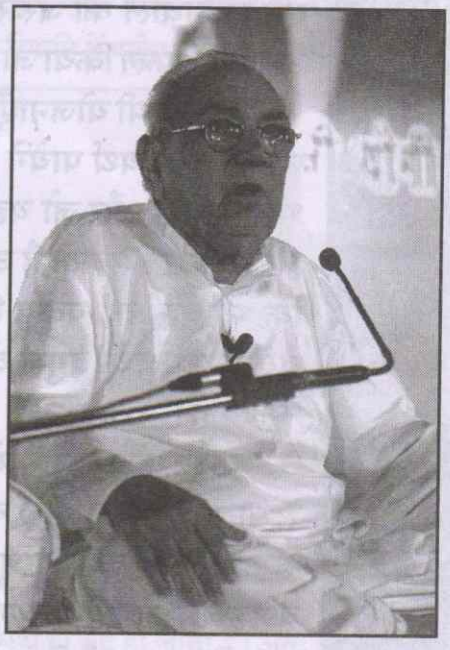

All the time a shadow was visible when glanced sideways. When I looked straight, nothing was seen. Thought maybe its an eye disease, went to the doctors but no such disease was found.

The chanting continued as before. One day a thought occurred that I have no knowledge of this discipline, so unnecessarily shouldn't fall into unseen problems hence stopped the chanting of the mantra but the **shadow continued** to be seen.

I thought since it is not causing any harm so if it is still visible then let it be it was shortly after stopping the chants, one night when I was sleeping in my village, around five in the morning I heard a voice which distinctly said" Beta(Son) now chant only 'Krishna'.

This voice was heard very clearly two times. Suddenly I woke up but who said it, couldn't understand. I still didn't chant. But since I was in the habit of chanting for years, it felt awkward without chanting.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

जीवन का महान् नियम

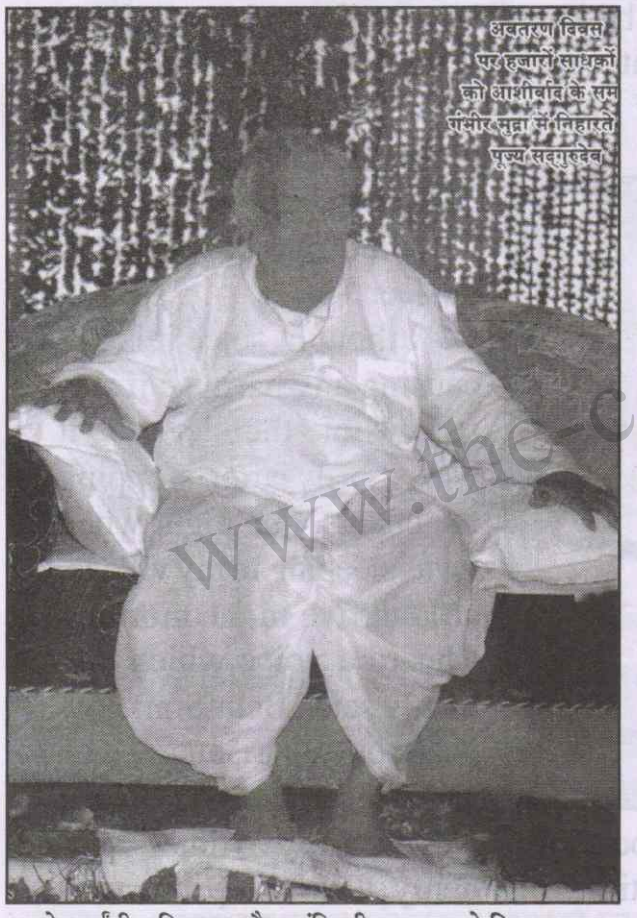

अपने सर्वांगीण विकास और क्रांति की सफलता के लिए सद्गुरु आज्ञा को सर्पोपरि मानना ही शिष्य का परम कर्तव्य है।

भगवान् हमारे आंदोलन के पीछे हैं

भविष्य के लिये हमारी क्या योजनाएँ होंगी? निश्चय ही योजनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं परंतु जो अधिक महत्त्वपूर्ण है वह है, एक निश्चित अपरिवर्तनशील प्रयोजन और अपने-आपको पूरी तरह शक्ति की वेदी पर न्यौछावर कर देने की तत्परता।

भगवान् इस आंदोलन के पीछे है और उन्हें किसी ऐसे कहनेवाले की जरूरत नहीं जो उन्हें बतलाये कि उसे कैसे सफल किया जाये। इस बारे में वे स्वयं देखेंगे।

हम जो भी योजनाएँ बनायें, काम का समय आने पर हम उसे व्यर्थ पायेंगे। क्रांतियाँ हमेशा आश्चर्य से भरी होती हैं और जो यह सोचता है कि वह क्रांति से शतरंज खेल सकता है उसे शीघ्र ही पता लग जायेगा कि भगवान् की पकड़ कितनी भंयकर होती है और युग के श्वास के बगुले के सामने मानव बुद्धि कितनी नगण्य है।

क्रांति के अवसरों में उसी के प्रधानता पाने की संभावना है, जो कोई योजनाएँ नहीं बनाता, उसकी जगह अपने हृदय को शुद्ध रखता है, जिसमें भगवान् की इच्छा अपनी घोषणा कर सके। जीवन का एक बड़ा नियम यह है कि कोई योजनाएँ न बनायी जाये, बल्कि एकमात्र अपरिवर्तनशील प्रयोजन हो। यदि तुम्हारी इच्छा-शक्ति प्रयोजन पर निश्चित हो, तब परिस्थितियाँ उचित मार्ग दिखायेगी परंतु योजनाएँ बनानेवाला अपने-आपको हमेशा अप्रत्याशित की झपट में पाता है।

-महर्षि श्री अरविन्द

लाल कमल पृष्ठ-371 पर

www.the-comforter.org

आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है ?

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

जब प्राणी संसार में जन्म लेता है तो वह सांसारिक ज्ञान से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है। वह सर्वप्रथम अपने माता पिता से भौतिक जगत् का ज्ञान प्राप्त करता है, उसके प्रथम गुरु उसके माता पिता होते हैं। इसके बाद विद्यालय में जाकर विद्या गुरु से, भौतिक विद्या का ज्ञान प्राप्त करता है। उसके बाद ज्यों ज्यों उसका ज्ञान बढ़ता जाता है, उसे आध्यात्मिक जगत्, अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है। वह धीरे धीरे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार उसे जैसा आध्यात्मिक गुरु मिलता है, उसी स्तर का ज्ञान प्राप्त करके, उस पथ पर चलने लगता है।

देवयोग से अगर रास्ता सही मिल जाता है तो कुछ हद तक अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है। अगर सीधा रास्ता नहीं मिलता तो परिणामों के अभाव में मनुष्य की आस्था धर्म पर से हट जाती है, वह इसे वर्ग विशेष की जीविका चलाने का व्यापार मात्र मान कर, इस पथ से विमुख हो जाता है। इस प्रकार संसार में ऐसे भ्रमित लोगों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। इस प्रकार इस व्यवसाय में लगे धर्म गुरु, तुच्छदान माँग कर किसी प्रकार अपना जीवन चलाने को विवश हो जाते हैं।

इस प्रकार के आध्यात्मिक गुरुओं की दशा देखकर संसार के लोगों के दिल में धर्म के प्रति ग्लानी पैदा हो जाती है। जब संसार में यह स्थिति चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब भगवान् को अवतार लेना पड़ता है। यह वही स्थिति होती है, जिसका वर्णन भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में इन शब्दो में किया है: -

यदा यदा हि धर्मस्य,
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 4:7
परित्राणाय साधुनां
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे।। 4:8।।

इस समय संसार में धर्म कैसी स्थिति में पहुँच चुका है, इससे आगे का

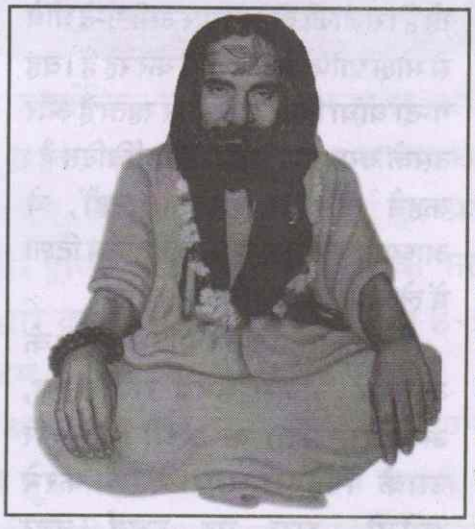

पथ ही बंद हो जाता है। अतः ईश्वर का अवतार होने का यह उपर्युक्त समय है। संसार भर के प्रायः सभी संतों ने उस शक्ति के प्रकट होने के संकेत दे दिये हैं। महर्षि अरविन्द ने तो भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार लेने की निश्चित तिथि की घोषणा कर दी थी।

श्री अरविन्द के अनुसार वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ सन् 1993-94 तक संसार के सामने प्रकट होकर अपने तेज से पूरे जगत् को प्रभावित करने लगेगी। इस प्रकार 21 वीं सदी में पूरे संसार में एक मात्र सनातन धर्म की ध्वजा लहरायेगी। 'जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे ही चेतन व्यक्ति के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।' इस प्रकार के संत सद्गुरु के प्रकट होने पर संसार का अन्धकार दूर होने में कोई समय नहीं लगता। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है। ''ईश्वर के धाम का रास्ता मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है।'' हमारे सभी संत कह गए है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड (शरीर) में है। अतः अन्तर्मुखी हुए बिना उस परमसत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार असम्भव है। श्री अरविन्द ने भी कहा है,''हिन्दू धर्म के शास्त्रों में बताई गई विधि से, मैंने अपने अन्दर ही उस पावन पथ पर चलना प्रारम्भ कर दिया है, जिस पर चलकर उस परमसत्ता से साक्षात्कार संभव है।

एक माह के थोड़े समय में ही शास्त्रों में वर्णित उन सभी आध्यात्मिक शक्तियों से साक्षात्कार होने लगा है, जो उस परमसत्ता तक पहुँचाने में सक्षम सहयोगी हैं। इस प्रकार मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि मैं अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकूँगा। ठीक इसी

www.the-comforter.org

प्रकार इसी रास्ते से चलकर पूर्ण सत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार किया हुआ चेतन व्यक्ति ही गुरु पद का अधिकारी होता है। **ऐसा चेतन संत सद्‌गुरु ही संसार का कल्याण कर सकता है।**

उससे जुड़ने वाले व्यक्ति को उस पथ पर चलकर अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कठिनाई नही होती है। वह पूर्ण शुद्ध चेतन आध्यात्मिक शक्तियों के संरक्षण में अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न पूरी करके अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होते हैं। हमारे शास्त्रों के अनुसार मनुष्य शरीर में छह चक्र होते हैं।

बिना चेतन गुरु के संरक्षण के, कोई व्यक्ति आध्यात्मिक आराधना प्रारम्भ करता है तो सफलता संदिग्ध होती है, उसे अपनी आराधना मूलाधार से प्रारम्भ करनी होती है। उस स्थान से चलकर छठे चक्र तक पहुँचने में, उसे कई मायावी सिद्धियों से सम्पर्क करना होता है। ये शक्तियाँ इतनी प्रबल होती है कि जीव को अपनी सीमा से बाहर नहीं जाने देती है। अगर किसी प्रकार जीव उठता-पड़ता नाभि चक्र में प्रवेश कर भी जाता है तो उससे पार निकलना असम्भव है।

इस समय सारा संसार इसी चक्र की शक्ति के इशारे पर नाच रहा है। इस क्षेत्र में पतन के सभी साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस शक्ति के भंवर-जाल में फँसकर जीव अन्त समय में भारी पश्चाताप करता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी से पत्रकारों ने अन्त समय में केवल एक ही प्रश्न पूछा था। ''आप भारत में सर्वोच्च राजनीति के शिखर तक पहुँचे हुए पहले व्यक्ति है।

आप एक मात्र भारतीय हैं जो वॉयसराय लॉर्ड के पद पर आसीन हुए। अब संसार से विदा होते समय आपको कैसा लग रहा है? राजाजी ने उत्तर दिया -''मेरे इस अन्तिम समय में, जब मैं, मेरे पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो मुझे भारी पश्चाताप होता है। मैं देख रहा हूँ, मेरे जीवन की कमाई का एक गन्दा राजनीति का घोंघा मेरे हाथ में है। मुझे इस गंदे घोंघे को लेकर आगे की यात्रा पर जाना पड़ेगा, यह देख कर मुझे भारी वेदना हो रही है।

मैंने अमूल्य मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गवां दिया, इसका मुझे भारी पश्चाताप हो रहा है''। राजाजी जैसे व्यक्ति की अनुभूति से भी किसी ने सबक नहीं लिया। संसार भर के सभी धर्माचार्य और तथाकथित अध्यात्मवादी राजनीति की धुरी के, याचक बन कर चक्कर लगा रहे हैं। राजाजी के अनुसार उसी गन्दे घोंघे से मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना कर रहे हैं। वह गन्दा घोंघा किस स्थान पर रहता है और उसके क्या गुण धर्म है? सर्वविदित है। कहने की आवश्यकता नहीं, ये आध्यात्मिक गुरु, संसार को किस दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार **''जिस समय राज सत्ता, अध्यात्म सत्ता के अधीन हो कर उसके निर्देशानुसार कार्य करने लगेगी, धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।''** हम देख रहे हैं, इस समय उल्टी गंगा बह रही है। ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण असम्भव है। चेतन संत सद्‌गुरु जो कि सभी मायावी शक्तियों को पराजित करके **'अगम लोक'** की सत्ता से जुड़ चुका होता है, संसार का कल्याण करने में सक्षम होता है। छठे चक्र यानि आज्ञाचक्र तक सारा क्षेत्र माया का क्षेत्र है, इस क्षेत्र को बिना संत सद्‌गुरु की कृपा के, पार करना असम्भव है। संत सद्‌गुरु क्योंकि मायातीत परम सता से सीधा सम्पर्क रखते हैं, इसलिए मायावी शक्तियाँ, उनके आगे करबद्ध खड़ी रहती हैं। इस प्रकार जो जीव ऐसे चेतन संत सद्‌गुरु की शरण में चला जाता है, अनायास स्वतः ही मायावी क्षेत्र को पार कर लेता है। इस प्रकार उसकी परम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा सीधा आज्ञाचक्र को भेद कर प्रारम्भ होती है। गुरु कृपा से ज्यों ही आज्ञाचक्र को भेद कर जीव मायावी शक्तियों से निकल जाता है, उसके पतन के सारे रास्ते अवरूद्ध हो जाते हैं। केवल एक रास्ता परम धाम का खुला रह जाता है, जिस पर चलकर परमसत्ता में लीन होने पर आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

इस प्रकार सनातन धर्म में गुरु पद की जो महिमा गाई गई है, वह पूर्ण सत्य है। बिना गुरु के आराधना करने पर माया के क्षेत्र की, भौतिक जगत् की सारी सुख सुविधाएँ मिलना सम्भव है, परन्तु मोक्ष सम्भव नहीं है। मोक्ष तो मात्र संत सद्‌गुरु की शरण में जाने से ही मिलता है। एक बार मायावी शक्तियों के चक्कर में आ जाने के बाद उसका पतन अवश्यंभावी है।

इस प्रकार असंख्य जन्मों तक ऊपर उठ उठ कर, गिरता रहता है और फिर मूलाधार से चढ़ाई प्रारम्भ करनी पड़ती है। इस प्रकार उठावा- पटकी का अन्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक जीव संत सद्‌गुरु की शरण में नहीं चला जाता है। ऐसे कृपालु संत सद्‌गुरु का पद, अगर भक्त ईश्वर से बड़ा मानें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

06.02.1988

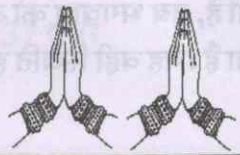

www.the-comforter.org

सर्वोत्तम यज्ञ-नाम (मंत्र) जप

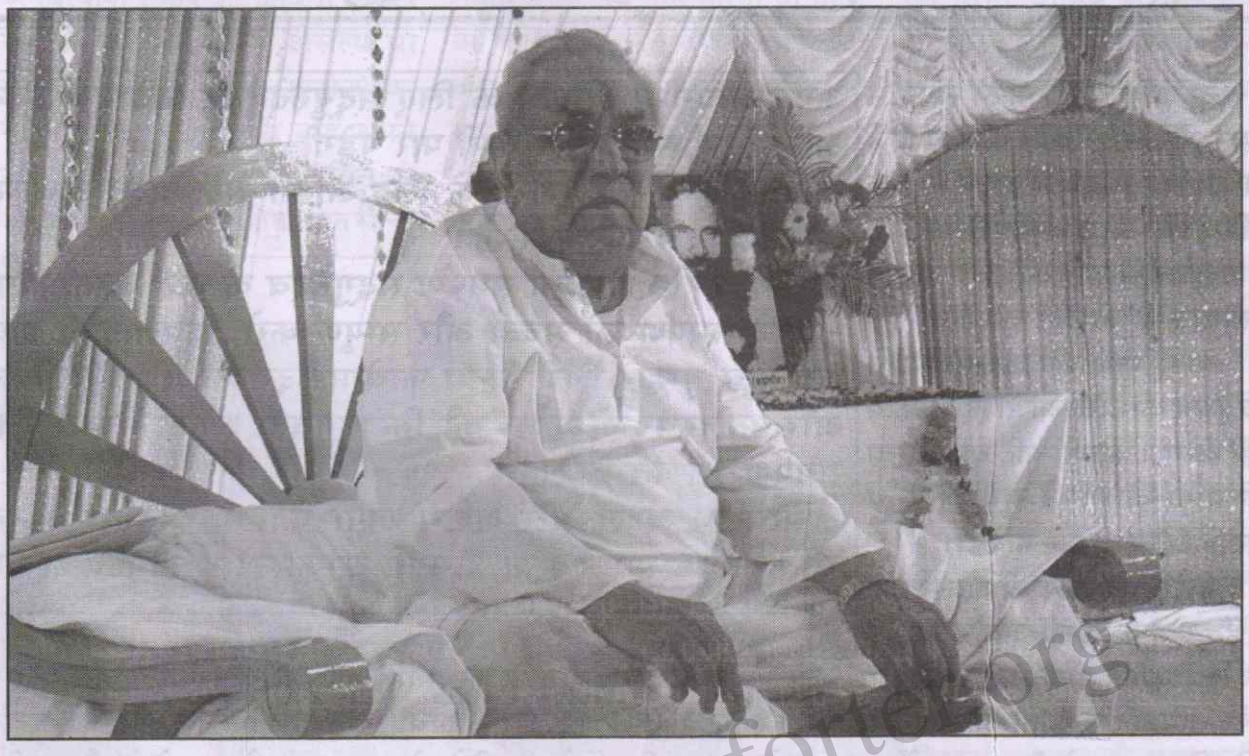

देखिए ! हर युग में, हमारे दार्शनिक ग्रन्थों के अनुसार आराधना का तरीका तय होता है। सत्युग का अलग था, त्रेता का अलग था और द्वापर का अलग था। हमारे धर्म में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, आराधना तय की गई है। अब कलियुग में क्योंकि मनुष्य की सामर्थ्य और दूसरे-दूसरे त्रेता और द्वापर के आराधना के तरीके करना संभव नहीं है इसलिए इस युग में केवल **हरि नाम का जप** ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है-**ईश्वर के नाम का जप**। नाम जप को भगवान् कृष्ण ने **सबसे उत्तम यज्ञ** की संज्ञा दी है।

भगवान् ने गीता में, दसवें अध्याय में अपने स्वरूपों का वर्णन किया है- पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि **यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ**। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है। महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है जिससे कोई हिंसा नहीं होती है। महाभारत काल में हिंसा बहुत हुई इसलिए वह लोग हिंसा से बहुत डरते थे। नाम जप से कोई हिंसा नही होती। कर्म काण्डी यज्ञ करोगे, आग में घी लकड़ी जलाओगे तो कमोबेश (थोड़े बहुत) जीव जलेंगे। मगर नाम जप में कोई हिंसा नहीं और मनु ने, मनु स्मृति में कहा है कि जप यज्ञ से, कर्म काण्डी यज्ञों से हजार गुणा ज्यादा फायदा होता है।

मैं तो आपको एक नाम बताऊँगा, वह आपको जपना है। वैसे क्योंकि मैं एक कृष्ण उपासक हूँ, इसलिए राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ। **भगवान् कृष्ण पूर्णावतार थे और उस कृष्ण के नाम का ही चमत्कार है कि यह सब परिवर्तन हो रहा है।** मेरा कोई पंथ नहीं, नया मत नहीं। वही वैदिक दर्शन को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

पूर्णता के लिए समग्र समर्पण-सद्गुरुदेव के प्रति

अपने सर्वांगीण विकास के लिए सद्गुरुदेव के प्रति पूर्ण निष्ठा और संपूर्ण समर्पण हो तभी पार पड़ेगी-
-कठिन कार्य की पूर्णता के लिए अडिग और अटूट अभीप्सा और भागवत्कृपा जरूरी है।
-शरीर के रोम रोम का समर्पण सद्गुरुदेव के प्रति करना होगा।
-अपने समर्पण को सच्चा और सम्पूर्ण करो, केवल तभी बाकी सब कुछ तुम्हारे लिये किया जायेगा। दूर कर दो, इस मिथ्या और आलस्यपूर्ण आशा को कि भगवती शक्ति तुम्हारे लिये समर्पण भी कर देगी।
- सत्य पर अटल और अडिग रहना-कारण, यदि वह असत्य की माँगों के सामने झुक जाय तो उसका उद्देश्य ही हार जायेगा।

दो शक्तियाँ ही अपने संगम से महान् और कठिन कार्य कर सकती हैं जो हमारी साधना का लक्ष्य है: एक अडिग और अटूट अभीप्सा जो नीचे से आह्वान करती है और ऊपर से परम भागवत्कृपा जो उत्तर देती है।

परन्तु परम भागवत्कृपा ज्योति एवं सत्य की अवस्थाओं से ही कार्य नहीं करेगी। कारण, यदि वह असत्य की माँगों के सामने झुक जाय तो उसका उद्देश्य ही हार जायेगा।

ज्योति एवं सत्य की अवस्थाओं में ही, एकमात्र इन्हीं अवस्थाओं में सर्वोच्च ज्योति अवतरित होगी; और ऊपर से अवतरित होती और नीचे से उन्मिलित होती सर्वोच्च अतिमानसशक्ति ही भौतिक प्रकृति की बागडोर अपने हाथ में ले सकती और उसकी कठिनाइयों का विनाश कर सकती है।.....आवश्यक है समग्र एवं सच्चा समर्पण; आवश्यक है दिव्य शक्ति की ओर अनन्य आत्मोन्मेष; आवश्यक है अवतरित होते सत्य का सतत् एवं प्रतिपद सर्वभावेण वरण और अभी भी पार्थिव प्रकृति पर शासन करती मनोमयी, प्राणमयी तथा अन्नमयी शक्तियों और रूपों के मिथ्यात्व का प्रतिपद सर्वभावेण वर्जन।

समर्पण होना होगा समग्र, उसे सत्ता के सारे अंगों में व्याप्त होना होगा। चैत्य का उत्तर और उच्चतर मनोमयी सत्ता की स्वीकृति पर्याप्त नहीं; यह भी पर्याप्त नहीं कि आन्तरिक प्राण नत हो जाय और आन्तरिक अन्नमयी चेतना प्रभाव को अनुभव करे। सत्ता के किसी भी अंग में, बाह्य में भी, ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिये जिसे कोई संकोच हो, ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिये जो संशय, अस्पष्टता और छल-कपट के पीछे छिपा हो, ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिये जो विद्रोह या अस्वीकार करता हो।

यदि सत्ता का कोई अंग समर्पण करे किन्तु दूसरा अंग संकोच करे, अपनी ही राह पर चले या अपनी ही शर्तें रखे तो जब-जब ऐसा होगा, इसका अर्थ यह होगा कि भगवत्कृपा को तुम स्वयं ही अपने से दूर हटा रहे हो।

यदि अपनी भक्ति और समर्पण के पीछे तुम अपनी कामनाओं, अहमात्मिका माँगों और प्राणिक आग्रहों के लिये छिपने का स्थान बनाते हो, यदि तुम इन चीजों को सच्ची अभीप्सा के स्थान पर लेते या उसके साथ मिला देते हो और इन्हें भागवत शक्ति पर लादने की चेष्टा करते हो तो तुम्हारा, भगवत्कृपा को, अपने रूपान्तर के लिये आह्वान करना निरर्थक है।

यदि तुम एक ओर या एक अंग में सत्य की ओर खुलते हो और दूसरी ओर बराबर शत्रु शक्तियों के लिये दरवाजे खोलते रहते हो तो यह आशा व्यर्थ है कि भगवत्कृपा तुम्हारे साथ रहेगी। तुम्हें मन्दिर को स्वच्छ रखना ही होगा यदि तुम वहाँ भगवान् को जाग्रत् रूप से स्थापित करना चाहते हो।

जब-जब महाशक्ति आती है, सत्य को लाती है तब-तब यदि तुम उसकी ओर पीठ फेर लो और उस मिथ्यात्व को फिर से बुला लो जिसे निकाल दिया गया है तो तुम भगवत्कृपा को निष्फलता का दोष नहीं दे सकते, दोष तुम्हारे अपने संकल्प के मिथ्याचार और तुम्हारे आत्मसमर्पण की अपूर्णता का है।

यदि तुम सत्य का आह्वान करते हो और फिर भी तुम्हारे अन्दर ऐसा कुछ है जो असत्य, अज्ञान और अदिव्य का वरण करता या उसका सर्वथा त्याग करने को अनिच्छुक ही है तो तुम सदा

www.the-comforter.org

ही आक्रमण की ओर खुले रहोगे और भगवत्कृपा तुमसे हट जायेगी। पहले यह खोजो कि तुममें असत्य या तमोग्रस्त क्या है ? और दृढ़ता से उसका त्याग करो, केवल तभी तुम्हें अपने रूपान्तर के लिये दिव्य शक्ति के आह्वान का अधिकार होगा। मत सोचो

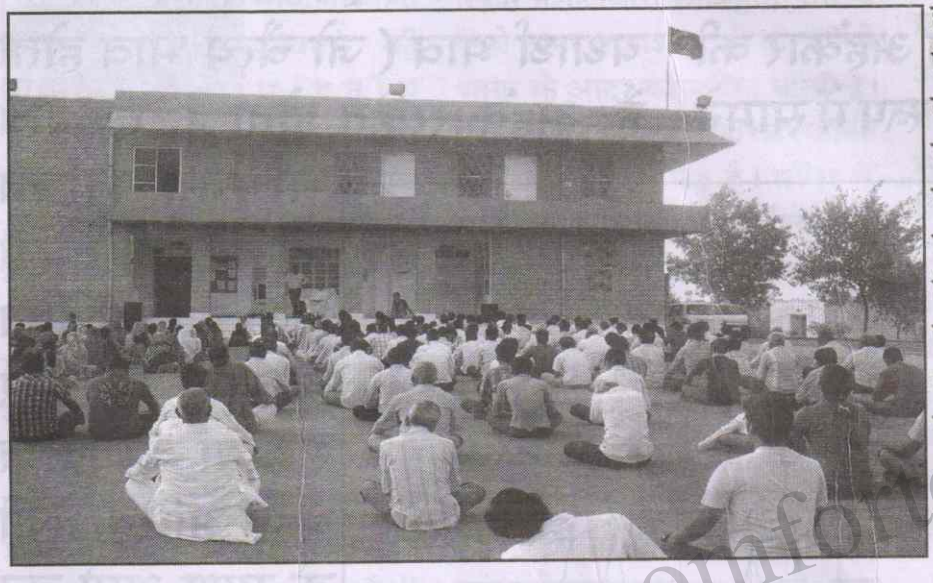

कि सत्य और असत्य, आलोक और अन्धकार, आत्मदान और आत्मपरता भगवान् को निवेदित किये गये गृह में एक साथ रहने दिये जा सकते हैं। रूपान्तर सर्वांगीण होना होगा; जो कुछ उसमे बाधक हो, उसका त्याग भी सर्वांगीण होना होगा ।

दूर कर दो इस मिथ्या धारणा को, तुम यदि भगवन्निर्दिष्ट शर्तें पूरी न करो तब भी दिव्य शक्ति तुम्हारे चाहने से तुम्हारे लिये सब कुछ करेगी या करने को बाध्य हैं। अपने समर्पण को सच्चा और सम्पूर्ण करो, केवल तभी बाकी सब कुछ तुम्हारे लिये किया जायेगा।

दूर कर दो, इस मिथ्या और आलस्यपूर्ण आशा को कि भगवती शक्ति तुम्हारे लिये समर्पण भी कर देगी। भगवान् तुम्हारा भगवती शक्ति के प्रति समर्पण चाहते हैं, पर जबर्दस्ती नहीं कराते, जब तक अटल रूपान्तर नहीं हो जाता, तब तक तुम भगवान् को नहीं मानने, उन्हें छोड़ देने या अपना आत्मदान वापस लेने को हर क्षण स्वतन्त्र हो, किन्तु अवश्य ही तुम्हे उसका आध्यात्मिक फल भी भोगने को तैयार रहना होगा। तुम्हारे समर्पण को होना चाहिये स्वेच्छाकृत और स्वच्छन्द; उसे होना चाहिये सजीव सत्ता का समर्पण, न कि जड़ कठपुतली या असहाय यन्त्र का।

तामसिक निश्चेष्टता को वास्तविक समर्पण मानने की भूल सदा ही की जाती है, किन्तु तामसिक निश्चेष्टा में से कोई भी सच्ची और सबल वस्तु नहीं आ सकती। भौतिक प्रकृति अपनी तामसिक निश्चेष्टता के कारण ही सारे तामस या अदिव्य प्रभावों का शिकार बनती है। अपेक्षित है भगवती शक्ति की क्रिया के प्रति प्रसन्न, सबल और सहायक अधीनता और सत्य के आलोकित अनुयायी की तम और असत्य से लड़ने वाले आन्तर योद्धा की, भगवान् के विश्वासी सेवक की आज्ञाकारिता।

यही सच्चा भाव है, और जो इस भाव को धारण कर सकते और बनाये रख सकते हैं, केवल वे ही निराशाओं और विपतियों के बीच अडिग विश्वास बनाये रख सकेंगे और अग्नि परीक्षा में से होकर विजय और महान् रूपान्तर को प्राप्त करेंगे।

महर्षि श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां
'श्री माताजी के विषय में' पुस्तक
पृष्ठ-401-403 तक

चेतन गुरु का चेतन मंत्र-चेतन गुरु से जो मंत्र प्राप्त किया जाता है। उस मंत्र को सिद्ध करने की शिष्य को कोई आश्यकता नहीं होती। चन्द दिनों में वह शक्ति अपनी प्रत्यक्षानुभूति कराने लगती है। जिस व्यक्ति ने चेतन गुरु से दीक्षा ली है, और शक्तिपात के द्वारा गुरु अपनी ताकत उसे दे कर गया है, केवल वही मंत्र दीक्षा देने का अधिकारी है। ऐसा व्यक्ति जब मंत्र दीक्षा देता है तो वह शक्ति मानव के कल्याण हेतु कार्य करती है। परन्तु अगर मंत्र दीक्षा देने वाला गुरु चेतन नहीं है तो उस मंत्र की शक्ति कभी भी प्रकट नहीं होगी।

अगर अधिक कष्टों के कारण एकाग्रता अधिक हुई तो लाभ के स्थान पर हानि होने की अधिक सम्भावना है, क्योंकि जब वह शक्ति चेतन होगी तो सक्षम गुरु के आशीर्वाद के अभाव में मनुष्य उसकी ताकत को सहन नहीं कर सकेगा और अनेक प्रकार की मानसिक व दिमागी बीमारियाँ लगने की ही सम्भावना अधिक रहेगी।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

शक्ति को अपने अंदर कार्य करने दो, परंतु इस विषय में सावधान रहो कि कहीं तुम्हारे वर्धित अहंकार की कोई क्रिया या सत्य के रूप में सामने आनेवाली कोई अज्ञान की शक्ति उसके साथ मिलजुल न जाये या उसका स्थान स्वयं ग्रहण न कर ले। विशेष रूप से इस बात की अभीप्सा करो कि तुम्हारी प्रकृति में से समस्त अंधकार और अचेतनता दूर हो जाये।

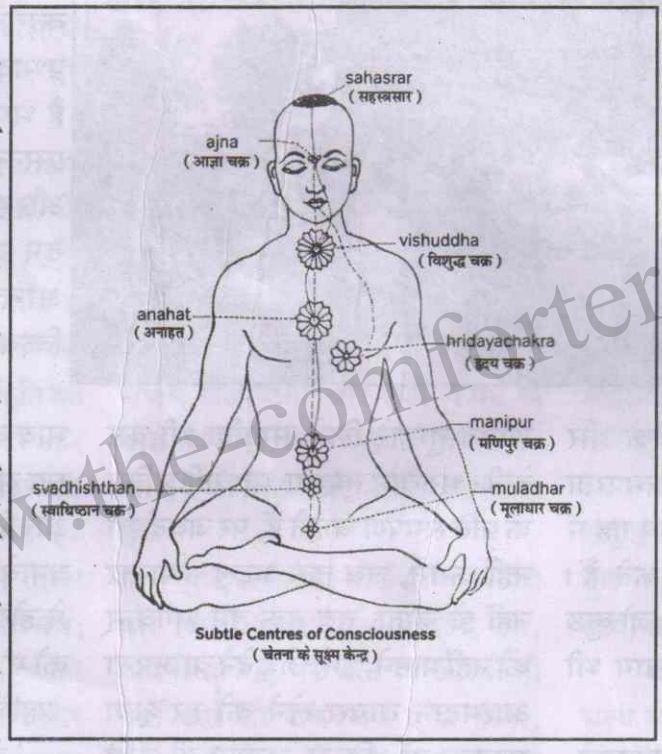

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

ये ही प्रधान शर्तें हैं जिनका पालन करने पर मनुष्य अतिमानसिक रूपांतर के लिये तैयार हो सकता है; परंतु इनमें से किसी भी शर्त को पूरा करना आसान नहीं है, और जब पूर्ण रूप से इन सबका पालन होगा तभी यह कहा जा सकता है कि प्रकृति तैयार हो गयी है। यदि साधना का यथार्थ भाव (जो चैत्य भाव होता है, अहंकाररहित होता है, एकमात्र भागवत-शक्ति की ओर ही खुला होता है) स्थापित हो जाये तो फिर साधना की क्रिया बहुत अधिक तेजी के साथ आगे बढ़ सकती है। इस यथार्थ भाव को ग्रहण करना और बनाये रखाना, अपने अंदर होने वाले परिवर्तन को बढ़ाते रहना - बस इतना करना ही साधक की ओर से सहायता करना है और इसे वह कर सकता है, और सर्वांगीण परिवर्तन की सहायता के लिये उससे बस इसी एक चीज की माँग की जाती है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

''सर आपके इस क्षेत्र में आगमन से पहले तो सारी, सृष्टि में व्याप्त जीवन की अद्वितीय धड़कन, कवि की कल्पना मात्र लगती होगी ! एक सन्त को मैं कभी जानता था, जो कभी कोई फूल नहीं तोड़ते थे। वे कहते थे: 'गुलाब के पौधे से मैं उसका सौन्दर्याभिमान कैसे छीन लूँ? अपनी उद्दण्डता से उसे निर्वस्त्र करके उसके आत्म-सम्मान को धक्का कैसे पहुँचाऊँ?' उनके उन सहानुभूतिपूर्ण शब्दों को आपके आविष्कोरों ने अक्षरशः यथार्थ सिद्ध कर दिया है।''

''कवि सत्य से अंतरंग होता है, जब कि वैज्ञानिक अजीबोगरीब ढंग से उस तक पहुँचने का प्रयास करता है। किसी दिन मेरी प्रयोगशाला में आकर क्रेस्कोग्राफ के असंदिग्ध प्रमाणों को देख लो।''

कृतज्ञतापूर्वक मैंने आमन्त्रण स्वीकार कर उन से विदा लीं बाद में मैंने सुना कि उन्होंने प्रेसिडेन्सी कॉलेज छोड़ दिया है और अब वे कोलकाता में एक अनुसन्धान केन्द्र स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

जब बोस इंस्टिट्यूट का उद्घाटन हुआ तब मैं उस उद्घाटन समारोह में उपस्थित थां सैकड़ों उत्साही लोग संस्थान के परिसर में इधर से उधर घूम रहे थे। विज्ञान के इस नये पीठ की कलात्मकता और आध्यात्मिक प्रतीकात्मकता को देखकर मैं मुग्ध हुआ। उसका प्रवेशद्वार सुदूर स्थित किसी प्राचीन मंदिर का अवशेष है। कमलों से भरे एक जलकुंड के पीछे स्थित मशालधारी स्त्री मूर्ति, नारी के लिये अमर प्रकाश-दात्री के रूप में भारत के आदर को सूचित करती है। एक उद्यान में अगोचर ब्रह्म को समर्पित एक छोटा-सा मंदिर है। मंदिर में मूर्तिविहीन रिक्त स्थान ईश्वर की निराकारता को सूचित करता है।

इस उद्घाटन के महान् अवसर पर सर जगदीशचन्द्र बोस का भाषण ऐसा लग रहा था मानों वह सीधे किसी अन्तःप्रेरित ऋषि के मुख से निःसृत हो रहा हो।

''इस संस्था को मैं आज केवल एक प्रयोगशाला के रूप में नहीं, वरन् एक मंदिर के रूप में समर्पित करता हूँ।'' उनकी आदरणीय महानता खचाखच भरे सभागृह पर एक अदृश्य चादर के समान छा गयी। ''अपनी खोज में मैं कब पदार्थ विज्ञान और प्रकृति विज्ञान के सीमा क्षेत्र में पहुँच गया, मुझे पता ही नहीं चला। मेरा अश्चर्य बढ़ता ही गया जब मैंने देखा कि सजीव जगत् और निर्जीव जगत् के बीच की सीमारेखाएँ मिटती जा रही हैं और स्पर्शबिन्दु उभरते जा रहे हैं। मैंने देखा कि निर्जीव जगत् निष्क्रिय नहीं था; वह तो असंख्य शक्तियों के प्रभाव में पुलकित हो रहा था।

''सब में एकसमान प्रतिक्रिया धातु, वनस्पति और प्राणी को एक ही सामान्य नियम में बाँधती प्रतीत हुई। वे सब थकान और खिन्नता के तत्त्वतः की संभावनाएँ बनी रहती थीं। मृत्यु के साथ जुड़ी हुई स्थायी प्रतिक्रियाहीनता के प्रदर्शन में भी सब एक समान थे। इस विराट सामान्यत्व से विस्मयविभोर होकर मैंने बहुत बड़ी आशा के साथ अपने प्रयोगों के परिणामों को रॉयल सोसायटी के समक्ष रखा। परन्तु वहाँ उपस्थित प्रकृति विज्ञानियों ने मुझे उनके लिये सुरक्षित क्षेत्रों पर अतिक्रमण करने के बदले उस पदार्थ-विज्ञान के क्षेत्र तक ही अपने अनुसंधान को सीमित रखने की सलाह दी जिस में मेरी सफलता का भरोसा था। मैंने अनजाने में एक अपरिचित जाति व्यवस्था के क्षेत्र में घुसकर उसके शिष्टाचार का उल्लंघन कर दिया था।

''वहाँ अनजाने में एक धर्मशास्त्रीय पूर्वाग्रह भी कार्यरत था, जो अज्ञान को भी धर्म के समान प्रश्नातीत मानता है। यह प्रायः भुला दिया जाता है कि जिस परमसत्ता ने हमें चारों ओर सृष्टी के इस नित्य बढ़ते ही जाते रहस्य से घेर रखा है उसी ने प्रश्न करने और समझने की इच्छा भी हम में प्रतिष्ठापित कर दी है। अनेक वर्षों तक लोगों की गलतफहमियों का शिकार बनते रहने से एक बात मेरी समझ में आ गयी-विज्ञान के उपासक का जीवन अनिवार्य रूप से अनन्त संघर्ष से भरा होता है। लाभ और हानि, सफलता और विफलता को एक समान मानते हुए उसे अपना जीवन प्रेमश्रद्धायुक्त अर्घ्य के रूप में अर्पण करना पड़ता है।

संदर्भ-योगी कथामृत, परमहंस योगानंद

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

२०वीं सदी के आखिरी दशक में जिस विश्व-व्यापी धार्मिक-क्रान्ति की भविष्यवाणी की गई उसका प्रारम्भ सन् 1960 में ही हो चुका है। इस प्रकार सम्पूर्ण मानवजाति [illegible] का पूर्ण विकास अर्थात दिव्य-रूप में रूपान्तरण 24-11-2019 तक हो जावेगा, और इसके साथ ही कलियुग समाप्त होकर सत्ययुग प्रारम्भ हो जावेगा। सभी ग्रह [illegible] नक्षत्रों की आकृति गोल है, तथा उनकी गति भी गोलाकार वृत बनाती है, इसलिए युग भी वृताकार गति से चलते हैं। इस प्रकार कलियुग के बाद सत्ययुग ही आवेगा।

यह ज्ञान भारत की देन है, परन्तु इसका लाभ सर्वप्रथम पश्चिमी जगत लेगा। [illegible] इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है — "भारत में रजोगुण का प्रायः सर्वथा अभाव है। इसी प्रकार पाश्चात्य देशों में सत्व गुण का अभाव है। इसलिए यह निश्चित है कि भारत से बही हुई सत्वधारा के ऊपर पाश्चात्य जगत का जीवन [illegible] निर्भर है; और यह भी निश्चित है कि बिना तमोगुण को, रजोगुण के प्रवाह से दबाए हमारा ऐहिक-कल्याण नहीं होगा और बहुधा पारलौकिक कल्याण में भी विघ्न उपस्थित होंगे।"

17/8/95

www.the-comforter.org

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरु की करूण कृपा से

अंतर्चेतना का विकास

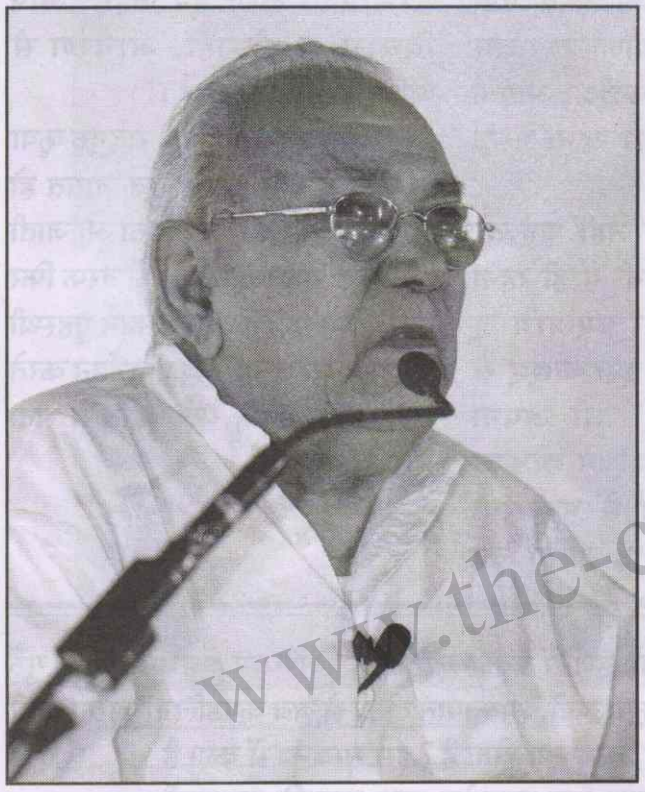

'गुरु' के पास देने-लेने के लिए कुछ नहीं होता है। देखिये मैं आपको बताता हूँ, जो सिस्टम मेरा है, वो आप सब का है। आप जन्म से पूर्ण हो। आपको इसकी जानकारी नहीं है। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा।

मैं तो आराधना का एक तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत जान जाओगे कि आप क्या हो? देने-लेने के लिए, किसी के पास कुछ भी नहीं है।

बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ है-अंदर है, उसको चेतन करने का एक तरीका है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

कहानी....

प्रधानमंत्री पद मुझे नहीं चाहिए !

चीन के महान् दार्शनिक च्युआंग जू एक दिन नदी किनारे अपूर्व मस्ती में बैठे थे। तभी वहाँ से, राजा दरबारियो के साथ गुजरे। उन्होंने च्युआंग जू को देखा और उनसे बातचीत की। राजा उनके ज्ञान और विद्वता से बहुत प्रभावित हुए।

महल पहुँचते ही राजा ने दूत भेज कर, उनको निमंत्रण भिजवाया। जब च्युआंग जू राजमहल पहुँचे तो राजा ने उनका भव्य स्वागत करते हुए कहा मैं आपके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूँ। मुझे विश्वास है कि आप इस राज्य के लिए बड़े महत्त्वपूर्ण साबित हो सकते हैं, इसलिए मैं आपको इस राज्य के प्रधानमंत्री का पद देना चाहता हूँ। च्युआंग जू दार्शनिक राजा की बात बड़े मनोयोग से सुन रहे थे। फिर जू ने राजा से कहा कि आपके प्रस्ताव के सबंध में हां या ना कहने से पहले आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ।

राजा ने प्रसन्नचित होकर कहा, पूछिए। दार्शनिक ने कहा, ''आपके इस कक्ष में, जो यह कछुए का कलेवर पड़ा है, अगर इसमें फिर से प्राणों का संचार हो जाए तो क्या यह कछुआ आपके इस सुसज्जित महल में रहना पसंद करेगा?''

राजा ने कहा, 'नहीं यह तो पानी का जीव है, पानी में ही रहना चाहेगा।' मुस्कराकर च्युआंग जू ने कहा तो क्या मैं इस कछुए से भी ज्यादा मूर्ख हूँ, जो अपना आनंदपूर्ण, आजाद जीवन छोड़कर यहाँ आप के महल में परतंत्रता और जिम्मेदारियो के काँटो का ताज पहनकर जीने को तैयार हो जाऊँगा? बंधन में बाँधने वाला यह प्रधानमंत्री पद मुझे नहीं चाहिए। दार्शनिक के विचार सुनकर राजा ने दार्शनिक का अभिवादन करते हुए कहा, 'आप विचारों से ही नहीं, आचरण से भी पूर्ण दार्शनिक हैं।'

सारतत्त्व यही है कि सद्गुरु कृपा से जीव में जब आत्मभाव जाग्रत हो जाता है, ज्ञान की पराकाष्ठा आ जाती है तो वह भौतिक जगत् की तरफ फिर लालायित नहीं होता है। अपने गृहस्थी जीवन के सब कार्यों का निर्वहन करते हुए भी पद, धन, यश आदि से सदा विरक्त रहता है।

कुण्डलिनी जागरण

–हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती, तब तक मोक्ष नहीं होता। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही 'मोक्ष' है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। सिद्धयोग अर्थात् महायोग में शक्तिपात-दीक्षा द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है। गुरु की व्याख्या करते हुए कहा गया है- ''वह शिष्यों को उनके अन्तर में प्रभावी किन्तु सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जाग्रत करता है और साधक को उस परमसत्य से साक्षात्कार-योग्य बनाता है।

''कुण्डलिनी जागरण के सम्बन्ध में कहा है -

यावत्सा निद्रिता देहे तावत जीवः पशुर्यथा।
ज्ञानम् न जायते तावत कोटियेाग-विधैरपि।

-स्वामी विष्णु तीर्थ-शक्तिपात।।

''जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहेगा। और वह उस दिव्य-परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।'' गुरु कृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है? इस सम्बन्ध में कहा है -

सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जागृति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि भिदयन्ति ग्रन्थायो पि च।।
(''स्वात्माराम, हठयोग प्रदीपिका''-3,2)

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का (ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रूद्रग्रन्थि) भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं। शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियन्त्रित और अनुशासित करता है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा मुम्बई (महाराष्ट्र) में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

बैंगलोर (कर्नाटक) के साधकों द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

जालोर (राज.) के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (जुलाई - 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा–गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16–7–2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा–डीडवाना (नागौर) में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16–7–2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

मन्दसौर (म.प्र) के साधकों द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

शिमोगा (कर्नाटक) के साधकों द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

जामडोली (जयपुर) के साधकों द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

वेटेनरी कॉलेज भरतपुर में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (27 से 29 जून 2019)

राजस्थान युनिवर्सिटी ऑफ वेटेनरी एण्ड एनिमल साइंसेज (राजूवास), बीकानेर में असिस्टेंट प्रोफेसर्स व अन्य स्टाफ को ऑरिएंटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (11 जुलाई 2019)

वेटेनरी कॉलेज जयपुर में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (1 जुलाई 2019)

करौली जिले के हिण्डौन सिटी तहसील के एक विद्यालय में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (1 जुलाई 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा मुम्बई द्वारा प्रत्येक रविवार को अश्विनी अस्पताल में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। ध्यानमग्न दर्जनों साधक

www.the-comforter.org

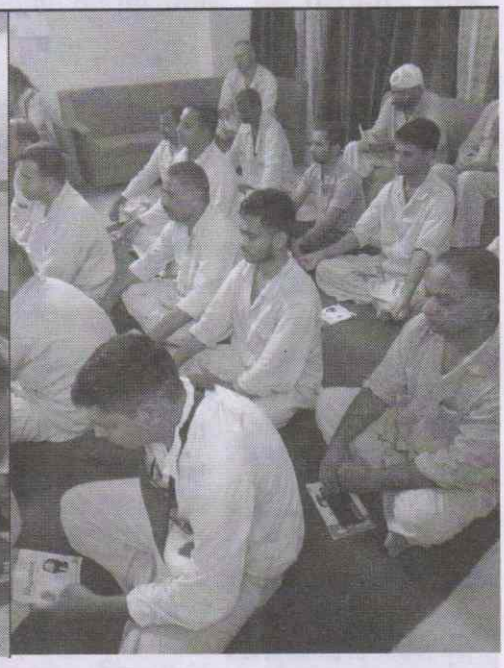

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई 2019 पर डाक विभाग द्वारा समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के नाम पर विशेष आवरण का विमोचन हुआ। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग छाया समाचार पत्रों की सुर्खियों में।

डाक विभाग ने सद्गुरू रामलाल सि

संदेश न्यूज। कोटा.

गुरु पुर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष्य में डाक विभाग कोटा मण्डल द्वारा मंगलवार को समर्थ सदगुरुदेव रामलाल सियाग (संस्थापक अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र, जोधपुर) पर विशेष आवरण जारी किया गया। सहायक अधीक्षक डाकघर गोविन्द वैष्णव ने बताया कि आवरण पर लगाने के लिए विशेष विरुपण (गुरुदेव रामलाल सियाग के चित्र की मोहर) इस्तेमाल की गई है। विशेष आवरण के आगे वाले भाग पर गुरुदेव रामलाल सियाग एवं बाबा गंगाई नाथ योगी (गुरुदेव सियाग के गुरु) के चित्र हैं एवं पीछे वाले भाग पर उनके सिद्धयोग की प्रस्तावना का वर्णन है।

उन्होंने बताया कि यह विशेष आवरण गुरुदेव सियाग पर हाड़ौती में प्रथम बार जारी किया गया है। विशेष आवरण की मुद्रण संख्या-2000 है एवं डाक विभाग द्वारा इसका विक्रय मूल्य पांच रुपए प्रति विशेष आवरण रखी गई है। उन्होंने बताया कि यह विशेष आवरण उदयपुर, जोधपुर, अजमेर एवं जयपुर फिलाटेली ब्यूरो एवं देश के विभिन्न फिलाटेली ब्यूरो में भी बिक्री के लिए उपलब्ध रहेंगे। कोटा प्रधान डाकघर नयापुरा में भी उक्त आवरण विक्रय के लिए उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि आवरण का

कर आज शुरू का।

दैनिक भास्कर 17-Jul-201 null Page 1

रामलाल सियाग का स्पेशल कवर लॉन्च

कोटा | डाक विभाग द्वारा मंगलवार को गुरुपुर्णिमा पर अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर कोटा ईकाई की ओर से सदुरु रामलाल सियाग एवं बाबा गंगाईनाथ योगी का डाक स्पेशल कवर जारी किया गया। डाक विभाग की ओर से सुबह डिवीजन मुख्यालय पर विमोचन समारोह आयोजित किया गया। डाक विभाग की ओर से इसके दो हजार स्पेशल कवर इश्यू किए गए हैं। यह देशभर के अलावा उदयपुर, जोधपुर, अजमेर, जयपुर फिलेटली ब्यूरो में भी उपलब्ध रहेंगे।

विमोचन कोटा डाक मण्डल कार्यालय नयापुरा कोटा में हुआ, जिसमें वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर मोहम्मद हनीफ, सहायक अधीक्षक डाकघर हनुमान बैरवा, वरिष्ठ फिलाटेलिस्ट व लाइफ टाइम सदस्य राजस्थान फिलाटेली संघ एनके जेरथ, सहायक अधीक्षक सुनील राठौड़ एवं निरीक्षक डाकघर एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा नकुल देव शर्मा सहित विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

दो हजार लिफाफे हुए जारी

संत सियाग पर डाक विभाग ने जारी किया आवरण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

कोटा. नयापुरा स्थित प्रधान डाकघर में मंगलवार को डाक विभाग कोटा मण्डल की ओर से गुरु पुर्णिमा पर अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर के संस्थापक संत रामलाल सियाग विशेष आवरण जारी किया गया। विभाग ने दो हजार आवरण जारी किए है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा के सहयोग से विमोचित आवरण पर लगाने के लिए विशेष विरुपण संत सियाग के चित्र की मोहर इस्तेमाल की गई है। आवरण के आगे वाले भाग पर संत रामलाल सियाग एवं उनके गुरु बाबा गंगाई नाथ योगी का चित्र है एवं पीछे वाले भाग पर उनके सिद्धयोग की प्रस्तावना है। डाक विभाग ने इसक विक्रय मूल्य पांच रुपए रखा है विशेष आवरण उदयपुर, जोधपुर अजमेर, जयपुर एवं देश के विभिन्न फिलाटेली ब्यूरो पर बिक्री के लिए उपलब्ध रहेंगे। कोटा मंडल के वरिष्ठ डाक अधीक्षक मोहम्मद हनीफ सहायक अधीक्षक गोविन्द वैष्णव सुनील राठौर व हनुमान बैरवा, वरिष्ठ फिलाटेलिस्ट एन के जेरथान फिलाटेली संघ, डाकघर निरीक्षक नकुल देव शर्मा व सत्संग केन्द्र के खुशहाल बावा, राजेश गौतम सहदेव शर्मा समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

संत सियाग पर डाक आवरण का विमोचन आज

कोटा. गुरुपूर्णिमा के मौके पर मंगलवार को डाक विभाग की ओर से अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर के संस्थापक संत रामलाल सियाग पर विशेष आवरण जारी किया जाएगा। डाकघर के सहायक अधीक्षक गोविंद वैष्णव ने बताया कि नयापुरा स्थित डाकघर में सुबह 9.30 बजे डाक आवरण का विमोचन किया जाएगा।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र का गुरुपूर्णिमा महोत्सव 16 को

कोटा. अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की शाखा का कोटा के आश्रम पर गुरूपूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई को धूमधाम से मनाया जाएगा। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कोट[...] आश्रम पर पदाधिकारियों ए[...] साधकों की गुरूपूर्णिमा महोत्स[...] के आयोजन के संबंध [...] आवश्यक बैठक हुई। कार्यक्रम [...] सुबह 10.30 बजे पूजा अर्चना [...] बाद मुख्य रूप से मेडिटेशन व[...] सत्र होगा जिसमें हजारों की संख[...] में उपस्थित साधक महर्षि पतंज[...] के योगसूत्र में वर्णित पद्धति [...] नामजप के साथ सामूहि[...] मेडिटेशन करेंगे।

विशेष आवरण का हुआ विमोचन

नवज्योति/कोटा

डाक विभाग, कोटा मंडल की ओर से गुरु पूर्णिमा पर मंगलवार को आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र के संस्थापक रामलाल सियाग पर विशेष आवरण (लिफाफा) जारी किया गया। नयापुरा स्थित मुख्य डाक घर में आयोजित समारोह में मंडल वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर मोहम्मद हनीफ, सहायक अधीक्षक डाकघर गोविन्द वैष्णव, सहायक अधीक्षक डाकघर हनुमान बैरवा, वरिष्ठ फिलाटेलिस्ट व राजस्थान फिलाटेली संघ के लाइफ टाइम सदस्य एनके जैरथ और अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर की शाखा कोटा के खुशहाल बावा ने विशेष आवरण का विमोचन किया। मंडल वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर मोहम्मद हनीफ ने बताया कि यह आवरण हाड़ौती में पहली बार जारी किया जा रहा है। आवरण की कीमत 5 रुपए रखी गई है। विमोचन के बाद अब कोटा के साथ ही उदयपुर, जोधपुर, अजमेर व जयपुर फिलेटिक्ल ब्यूरो व देश के विभिन्न ब्यूरो में भी बिक्री के लिए उपलब्ध रहेगा। आवरण के प्रायोजक अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र की शाखा कोटा हैं।

विशेष आवरण का विमोचन आज

नवज्योति/कोटा। डाक विभाग, कोटा मंडल की ओर से गुरू पूर्णिमा पर मंगलवार को आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र के संस्थापक समर्थ सदगुरूदेव रामलाल सियाग पर विशेष आवरण जारी किया जाएगा। इस आवरण पर लगने वाले विशेष विरूपण में गुरूदेव के चित्र की मोहर का इस्तेमाल किया जाएगा। इस आवरण के आगे के भाग पर गुरूदेव व बाबा गंगाई नाथ योगी का चित्र रहेगा और पीछे वाले भाग पर उनके सिद्धयोग की प्रस्तावना का वर्णन रहेगा। यह आवरण गुरूदेव सियाग पर हाड़ौती में पहली बार जारी किया जा रहा है। आवरण की कीमत 5 रुपए रखी गई है। मंडल डाक अधीक्षक मोहम्मद हनीफ ने बताया कि विशेष आवरण उदयपुर, जोधपुर, अजमेर व जयपुर फिलेटिक्ल ब्यूरो व देश के विभिन्न ब्यूरो में भी बिक्री के लिए उपलब्ध रहेगा। आवरण के प्रायोजक अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र की शाखा कोटा है।

विशेष आवरण का हुआ विमोचन

नवज्योति/कोटा

डाक विभाग, कोटा मंडल की ओर से गुरु पूर्णिमा पर मंगलवार को आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र के संस्थापक रामलाल सियाग पर विशेष आवरण (लिफाफा) जारी किया गया। नयापुरा स्थित मुख्य डाक घर में आयोजित समारोह में मंडल वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर मोहम्मद हनीफ, सहायक अधीक्षक डाकघर गोविन्द वैष्णव, सहायक अधीक्षक डाकघर हनुमान बैरवा, वरिष्ठ फिलाटेलिस्ट व राजस्थान फिलाटेली संघ के लाइफ टाइम सदस्य एनके जैरथ और अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर की शाखा कोटा के खुशहाल बावा ने विशेष आवरण का विमोचन किया। मंडल वरिष्ठ अधीक्षक डाकघर मोहम्मद हनीफ ने बताया कि यह आवरण हाड़ौती में पहली बार जारी किया जा रहा है। आवरण की कीमत 5 रुपए रखी गई है। विमोचन के बाद अब कोटा के साथ ही उदयपुर, जोधपुर, अजमेर व जयपुर फिलेटिक्ल ब्यूरो व देश के विभिन्न ब्यूरो में भी बिक्री के लिए उपलब्ध रहेगा। आवरण के प्रायोजक अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र की शाखा कोटा हैं।

www.the-comforter.org

।। ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः ।।

बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि **गुरु कृपा** से

भारतीय डाक विभाग, कोटा मण्डल द्वारा

गुरुपूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई, 2019

के उपलक्ष में

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के विशेष आवरण का विमोचन किया गया।

विशेष आवरण Special Cover

गुरुपूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई, 2019
Guru Purnima Mahotsava 16 July, 2019

Front

धर्म का प्रमाण किसी ग्रंथ पर नही मनुष्य की रचना की सत्यता पर निर्भर है। ग्रंथ तो मनुष्य की रचना के बहिर्गमन है। मनुष्य ही इन ग्रंथों के प्रणेता है। अतः जब तक संसार में मनुष्य शरीर रूपी ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नही होता, शान्ति पूर्ण रूप से असम्भव है।

- यह योग वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है, हे सत्पुरुषों इसका सेवन करो।

The proof of religion relies on the truth of the creation of human body and not on any scripture. Scriptures are an outward outcome of man's intellect. Man is the inspirational source of scriptures. From this it becomes clear that till the divine science which can help in understanding the scripture in the form of human body is not revealed it is impossible to have peace in the world.

- This yoga is an eternal fruit of Vedas which are like a wish fulfilling tree. People kindly use this.

Special Cover	:-	The Special Cover has been released on the occasion of **"Guru Purnima Mahotsava" 16 July 2019** that is being celebrated in the divine presence of Gurudev Ramlal Ji Siyag by AVSK Branch Kota.
विशेष आवरण	:-	यह विशेष आवरण गुरुदेव रामलाल जी सियाग की आध्यात्मिक उपस्थिति में कोटा स्थित आश्रम पर मनाये जाने वाले **"गुरुपूर्णिमा महोत्सव" 16 जुलाई 2019** के पावन पर्व पर जारी किया गया ।
Special Cancellation	:-	Depicts a image of Samarth Sadgurudev Shree Ramlal Ji Siyag.
विशेष विरूपण	:-	समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को दर्शाया गया है।

द्वारा अनुमोदित : राजस्थान डाक परिमण्डल, भारतीय डाक विभाग
Approved by : Rajasthan Postal Circle, Department of Posts, India

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र-जोधपुर, शाखा कोटा (राज.)
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra, Jodhpur, Branch Kota (Raj.)

मूल्य : 5/-
Price : 5/-
मुद्रण संख्या : 2000
Print Quantity : 2000

Back

www.the-comforter.org

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग में
परम शांति का एहसास
जोधपुर मुख्यालय में फोन पर व आश्रम आए हुए कुछ साधकों से हुई बातचीत के कुछ अंश-

-कनाडा- गुरुवार, 25 जुलाई को रात्रि 8 बजे के लगभग एक महिला का फोन आया और उन्होंने सिद्धयोग के बारे में विस्तार से जानने की इच्छा जाहिर की। उसने बताया कि उन्हें गर्भाशय का कैंसर है और वह कीमोथैरेपी और अंग्रेजी दवाईयों से ऊब चुकी है और मन करता है कि अब वह आध्यात्किता से अपनी समस्या का समाधान करेगी। उनको गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई और यह बताया गया कि आप सघन नाम जप और नियमित रूप से सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान करें, इससे आपको फायदा मिलेगा।

जब उनसे यह पूछा गया कि आपको सिद्धयोग दर्शन की जानकारी कैसे मिली तो उसने जो बताया वह बड़ा ही अद्भुत और आध्यात्मिक शक्ति अपना कार्य कैसे करती है? एक रोंगटे खड़े करने वाला उत्तर था।

उन्होंने बताया कि "वह भगवान् श्री राम और सीता माता की परम भक्त हैं और हमेशा उनकी पूजा अर्चना करती है। गर्भाशय में कैंसर की गाँठ थी उसका ऑपरेशन करवाया, कीमोथेरेपी ली और बुधवार 24 जुलाई को हॉस्पीटल से छुट्टी मिली। आज गुरुवार को मैं वापस भगवान् श्री राम की पूजा अर्चना के लिए बगीचे में फूल तोड़ने गई। जब मैं फूल तोड़ रही थी तो मुझे अचानक ख्याल आया कि मुझे नेट पर "**सिद्धयोग**" के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। फिर क्या था? मैं वापस पूजा स्थल पर गई और फूल चढ़ाकर नेट पर सर्च करने लगी। सिद्धयोग के बारे में सर्च किया। प्रथम सर्च में ही यू-ट्यूब चैनल पर गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का वीडियो मिला। गुरुदेव की दिव्य वाणी सुनी और संस्था के संपर्क सूत्र पर फोन किया।

मुझे एक बार जोधपुर आश्रम आना है।

फिर उनके परिवार के बारे में विस्तार से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि वर्षों पहले हमारा परिवार बिहार और नेपाल की सीमा पर भोजपुर में रहत था, बाद में हिन्दू बाहुल्य देश मॉरीशस में जाकर बस गये। अब मेरा परिवार कनाडा में रहता है। अब मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि मेरा समाधान **अध्यात्म पथ** से ही होगा।

इस घटना से पूज्य गुरुदेव की एक बात याद आती कि "**यह दर्शन विश्व दर्शन होगा और पूरी दुनिया चकाचौंध रह जायेगी कि यह क्या हो गया?**" जब होगा तब कुछ ऐसी ही लीला रची जायेगी। यदि एक के दिमाग में यह विचार कौंधता है कि मुझे सिद्धयोग की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए तो लाखों-करोड़ों के भी आ सकता है। सिद्धयोग दर्शन में शांति और नीरवता का परम एहसास है। मनुष्य मात्र को अपने परम सुख और आनंद के लिए अपनी आत्मा में सिद्धयोग को धारण करना चाहिए।

-अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़)

एक 55 वर्षीय बुजूर्ग का फोन आया कि मैं पिछले एक महिने से यू ट्यूब से साइबर दीक्षा लेकर संजीवनी मंत्र का जप और ध्यान कर रहा हूँ। मुझे बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा है। मैं कई सत्संगों में गया हूँ, लेकिन आध्यात्मिकता का परिणाम प्रथम बार महसूस कर रहा हूँ।

-लखनऊ (उत्तरप्रदेश)- मैं 88 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति हूँ। मेरे स्वयं का बड़ा मकान है। तीन बेटे हैं। सब अलग-अलग रहते हैं। पत्नी दो साल पहले चल बसी है। बेटे कभी कभार थोड़ी देर के लिये मिलने आते हैं, काम-काज में कोई हाथ नहीं बंटाते और वापस चले जाते हैं। मैं स्वयं खाना बनाकर खाता हूँ। पिछले 7-8 वर्षों से बस गुरु नाम के सहारे ही जीवन बसर कर रहा हूँ। कहीं से कोई आस नहीं। व्यक्ति का मुँह देखने के लिये ही तरस जाता हूँ। अब केवल सद्गुरु का सहारा बचा है।

www.the-comforter.org

इससे यह बात सिद्ध होती है कि बुढ़ापे में भी और जवानी में भी जिनके सिर पर सद्गुरु का छाया है, वास्तव में वही दुनिया में सुखी और आनंदमयी इंसान है अन्यथा जीवन में बोझ के सिवाय कुछ नहीं है।

-जोधपुर आश्रम-गुरुवार, 25 जुलाई-तीन विद्यार्थी ध्यान करने आये। तीनों की अपनी अलग अलग अनुभूति थी। तीनों ही सहपाठी और एक साथ रहते हैं। एक विद्यार्थी किसी के कहने पर 16 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर जोधपुर आश्रम आया था लेकिन दूसरे लोगों के योग होते देख कर घबरा गया और ध्यान नहीं कर पाया। फिर अपने कमरे पर जाकर ध्यान किया तो स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई और इतनी तीव्र गति से होने लगी तो फिर घबराने लगा लेकिन ध्यान के दौरान होने वाली आनंददायी अनुभूति के कारण ध्यान लगाना छोड़ भी नहीं सका। उसको देख कर दूसरे सहपाठी ने भी ध्यान करने की इच्छा जाहिर की तो उसने गुरुदेव का कार्ड सामने रखकर उसको ध्यान करवाया तो उसका भी ध्यान लगना शुरू हो गया और उसके लम्बे समय से पेट की समस्या थी, वह तीन दिन में ही ठीक हो गई।

उसका इतना गहरा ध्यान लगने लगा कि वह कहीं भी बैठा हो, आँख बंद होते ही ध्यान शुरू हो जाता है और मेरे सामने भी ध्यान शुरू हो गया, गुरुदेव का नाम लेते ही।

नाम जप की भी उसको जरूरत नहीं पड़ती। तीसरा सहपाठी दोनों को देखता था और उसने प्रयास किया लेकिन ध्यान नहीं लगता था। जोधपुर आश्रम आकर उसने उनके साथ ध्यान किया तो उसका भी ध्यान लग गया।

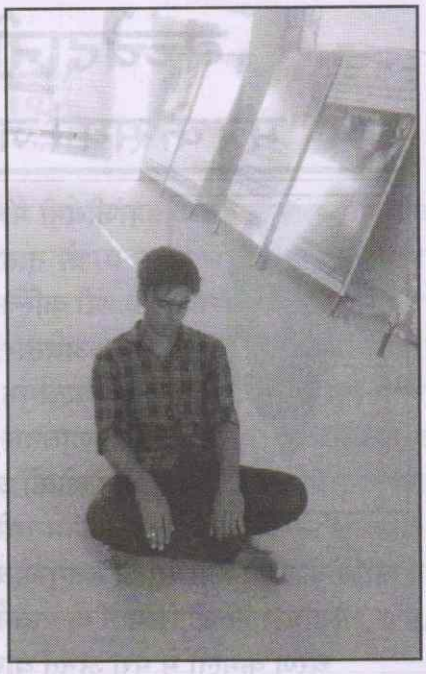

इस प्रकार जो भी साधक गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से जुड़ता है, वह धैर्य से नाम जप व नियमित ध्यान करता रहे, उसका कल्याण निश्चित है।

प्रत्येक प्राणी की आत्मा के अपने प्रारब्ध हैं इसलिए धीरज धरकर बस सघन नाम जप व ध्यान करता रहे ऐसा पुण्य और पवित्र पल दुबारा नहीं मिलेगा।

देश दुनिया से ऐसे कई फोन आते हैं, जिनके अलग अलग अनुभव होते हैं। कई तो यह आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि एक तस्वीर से इतना बड़ा परिवर्तन कैसे आ रहा हैं? यह समझ से परे हैं!

❖❖❖

अमरत्व के लिए सघन मंत्र जप और ध्यान जरूरी है-

"बातें करने-सुनने से ही यात्रा पूरी नहीं हो जाती। उसके लिए संभल-संभल कर निरन्तर चलना पड़ता है। प्रत्येक जीवन चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने प्रतिक्षण चल रहा है किन्तु मृत्यु की ओर। आप भी, मैं भी, सब कोई। हमें क्रियात्मक रूप में अपनी दिशा बार-बार मृत्यु की ओर से, अमरत्व की ओर बदलनी पड़ेगी।"

-स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज, "अंतिम रचना" पुस्तक पृष्ठ-242

बच्चेदानी में गाँठ से कैंसर का खतरा था

मंत्र के सघन जप और नियमित ध्यान से गाँठ खत्म हो गई

संजीवनी मंत्र के दाता श्री कल्कि अवतार, विश्वगुरु, नारायणावतार, तीन लोकों व उनमें बसे जीवों के पालनहार समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के पावन चरण कमलों में मेरा अनंत बार प्रणाम।

मैंने व मेरी पत्नी ने 16 जुलाई 2015 को सद्गुरुदेव से मंत्र दीक्षा ली।उससे पहले मेरा जीवन एक नरक के समान था मैं और मेरी पत्नी दोनों बीमार थे।

हॉस्पीटल व भोपों के खूब चक्कर काटे और लाखों रूपये खर्च कर दिये फिर भी कोई राहत नहीं मिली। सुभम हॉस्पीटल जोधपुर, बाड़मेर और भी कई निजी व सरकारी हॉस्पीटल के चक्कर काटे, सभी ने एक ही बात कही- 'तुरंत ऑपरेशन करवाओ'। डॉक्टरों ने कहा 'इसके (मेरी पत्नी) के बच्चा दानी में गाँठ है, इसलिये कैंसर का खतरा होने की वजह से तुरंत ऑपरेशन करवाओ। लेकिन मैंने कहा मुझे तीन दिन की दवाई दो ताकि मैं पैसों का जुगाड़ कर सकूँ।

मेरे पास जो पैसे थे वो मैंने पहले से ही दवाईयों में लगा दिये थे। तीन दिन की दवाई लेकर घर आया तो घर वालों ने कहा 'चलो भोपाजी के चलते हैं' तो वहाँ गये, वहाँ जाने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ा। फिर तांत्रिक के पास गये तो वहाँ पर भी कोई फायदा नहीं हुआ और पहले से भी ज्यादा परेशानी होने लगी।

तांत्रिकों ने कहा -'माजीसा का प्रकोप है, वहाँ जाकर चढ़ावा करना पड़ेगा', लेकिन मैंने मना कर दिया। फिर मैंने हार कर कहा अब भगवान् की जैसी मर्जी। फिर मेरे को गुरुदेव का कार्ड मिला, कार्ड पर गुरुदेव का फोटो था व ध्यान की विधि लिखी हुई थी, मैंने गुरुदेव का फोटो सामने रखकर कार्ड में बताई गई विधि से ध्यान शुरू किया तो मेरे शरीर में कंपन होने लगा। फिर मैंने पत्नी को इसके बारे में बताया तो उसने कहा 'ठीक है अभी ध्यान करती हूँ', उसी समय ध्यान करने बैठी और उसी समय ध्यान लग गया और दो-तीन दिन में बिल्कुल ठीक हो गई।

गुरुदेव ने ध्यान में आदेश दिया कि 'आप जोधपुर आश्रम आ जाओ।' हम वहाँ गये, मंत्र दीक्षा ली और तब से ध्यान व मंत्र जाप कर रहे हैं जिससे हमारा जीवन ही बदल गया।

समर्थ सद्गुरुदेव भगवान् की ऐसी असीम करूणामयी कृपा बरसी कि अब आनंदमय जीवन जी रहे हैं और नियमित रूप से संजीवनी मंत्र का सघन जप व ध्यान कर रहे हैं।

-किशनाराम
पुत्र श्री मूलारामजी
गाँव-भींयाड़, तहसील-शिव,
जिला-बाड़मेर (राज.)

अंतर की आवाज के प्रति सचेत रहना-तुम्हारी साधन की गाड़ी पटरी पर चल निकली है, किन्तु एक बात का विशेष ध्यान रखना, कि अन्तर की आवाज सदैव ही सत् की आवाज नहीं होती। कई बार वासनामय मन भी बड़ी विवेकपूर्ण तथा युक्तिसंगत बातों से मनुष्य को बहला-फुसला कर भ्रम में डाल देता है तथा कुमार्गगामी बना देता है। जब कोई अन्तर में सत् की आवाज सुनने लगता है तथा वासना एवं अकर्तव्य की अवहेलना करता है तो वासनात्मक मन भी अन्तर की आवाज़ का रूप धारण कर जीव को मार्ग से भटकाने का प्रयत्न करने लगता है।

मन सभी प्रकार के हथकंडों से अवगत है। वह विवेक तथा युक्ति का भी, अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए उपयोग करने में सक्षम है। जीव वासनामय मन की आवाज़ को सत् स्वरूप शक्ति की आवाज़ समझ कर भ्रमित हो जाता है तथा धर्म का पथ त्याग देता है, इसलिए इस विषय में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। **सत् एवं असत् में विवेक हर साधक के लिए एक अनिवार्यता है।**

-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज, सोपान पुस्तक से

www.the-comforter.org

याद्दाश्त में अभिवृद्धि

परम् पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) को कोटि-कोटि नमन् करती हूँ। मेरी बचपन से ही याद्दाश्त कमजोर थी। जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती थी तो पढ़ाई के बारे में मुझे कुछ नहीं आता था, जितना पढ़ती थी, भूल जाती थी। मुझे कुछ भी याद नहीं रहता था। मेरे दादा-दादी और पापा गुरुदेव का ध्यान करते थे। फिर एक दिन मेरे दादा जी ने मुझे सलाह दी कि तुम भी गुरुदेव का ध्यान करो, जिससे तुम्हारा पढ़ाई में अच्छा मन लगेगा। तब से आज तक मैं गुरुदेव का ध्यान करती हूँ और मेरे में बहुत बदलाव आया है। अब मैं 2019 में बारहवीं कक्षा में 66.40 प्रतिशत अंकों से उतीर्ण हो गई हूँ। ये सब गुरुदेव की कृपा है। गुरुदेव के संजीवनी मंत्र से विद्यार्थियों की एकाग्रता व याद्दाश्त शक्ति बढ़ती है, यह मेरा अनुभव है। मुझे मेरे गुरुदेव पर भरोसा है। जय कल्कि अवतार

-सुमित्रा पंवार पुत्री श्री गायड़राम पंवार
गाँव- आगोलाई, जिला- जोधपुर (राज.)

सिद्धयोग में वर्णित संजीवनी मंत्र का कमाल

मुँह का कैंसर ठीक हुआ

मैं नटवरलाल पुत्र श्री दाऊलाल जी, निवासी- आमली का वास, सांझी का मंदिर, जोधपुर। जुलाई 2018 में मेरे मुँह का कैंसर हो गया, बाद में जब मेरे को पता चला कि मेरे मुँह का कैंसर है तो मैंने अगस्त 2018 में अहमदाबाद जाकर ऑपरेशन करवाया। परन्तु ऑपरेशन करवाने व दवाईयाँ लेने के बाद भी मुझे कोई आराम नहीं मिला। जनवरी 2019 को मुझे मेरे एक परीचित ने मेरे घर पर आकर गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के बारे में बताया, तब से मैं निरंतर गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का जाप व ध्यान कर रहा हूँ। आज मैं गुरुदेव की कृपा से पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ।

सद्गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम !

-नटवरलाल
आमली का वास,
सांझी का मंदिर,
जोधपुर (राज.)

श्री गुरु कृपा ही केवलम्, शिष्यस्य परम मंगलम्

''मेरे शरीर में और आपके शरीर में कोई अंतर नहीं है। जो आपके पास है, वो ही मेरे पास हैं। मैंने गुरु की कृपा से, उनकी मेहरबानी से, उसको जीवन में काम लेना सीख लिया, आप भी सीख सकते हो।

आप भी अपना विकास कर सकते हो। ये आपका अपना विकास है और विकास भी ऐसा, जो आज तक नहीं हुआ।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
गुरु पूर्णिमा महोत्सव-2002

www.the-comforter.org

सिद्धयोग का कमाल

आनंदमय जीवन जीने की कला सीखी

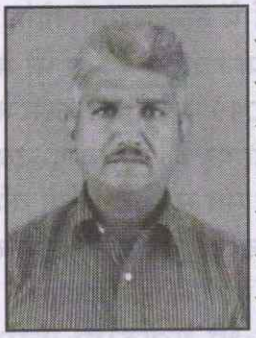

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि प्रणाम।

मैं पैशे से मेकेनिक हैड एवं लेथ मशीन का काम करता हूँ। मैं मेरी दुकान में चढ़ने के लिए तीन सीढ़ियाँ हैं, उन पर नहीं चढ़ पाता था, घुटनों व कमर में भयंकर दर्द होता था। डॉक्टरों से जाँच करवाई तो उन्होंने बोला कि कमर का ऑपरेशन होगा। लेकिन मैं ऑपरेशन नहीं करवाना चाहता था।

रात में सोते समय घुटनों में इतना दर्द होता था कि करवट बदलते समय पाँव को हाथ से उठाकर रखना पड़ता था। इस दौरान मैंने डोडा एवं अफीम भी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेना शुरु कर दिया, जो धीरे-धीरे ज्यादा मात्रा में लेने लग गया अर्थात् अफीम व डोडा लेने की आदत हो गयी। लगभग 5-6 वर्ष तक सेवन करता रहा।

जनवरी 2018 में एक दिन मेरी दुकान पर एक ग्राहक आया जो पहले से ही गुरुदेव से दीक्षित था, उसने मेरी नशे व शारीरिक तकलीफ को देखकर कहा कि 'यदि आप घर बैठे ही गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की तस्वीर से ध्यान करोगे व हर वक्त मंत्र का जाप करोगे, जो गुरुदेव बताते हैं तो इस दोनों समस्याओं से मुक्ति मिल जाएगी।'

मरता क्या न करता? मैं दुःखी था इसलिए उस ग्राहक ने मुझे गुरुदेव की आवाज में मोबाइल से मंत्र सुनाकर दीक्षा दी व गुरुदेव की तस्वीर के सामने बिठाकर उसी समय ध्यान करवाया। मैं पालथी मारकर भी नहीं बैठ सकता था, अतः पैर लम्बे करके ही ध्यान करने लगा। पहली बार में ही ध्यान में अपने-आप पालथी लग गई। मैंने ध्यान में देखा कि मेरी आँखों से सफेद दूधिया प्रकाश जैसे गोले निकलकर गुरुदेव की तस्वीर की तरफ जा रहे हैं।

> **''पहला सुख नीरोगी काया''**
> यह उक्ति गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से चरितार्थ हुई --
> -बिना ऑपरेशन के घुटनों व कमर का दर्द ठीक हुआ।
> -डोडा, अफीम व तम्बाकु से छुटकारा
> -असीम शांति का एहसास होता है।
> -मन का हल्का होना, शारीकि वजन का कम होना।
> -लैथ मशीन का काम पहले से ज्यादा स्फूर्ति और ताकत से कर पाना।
> -मन में जो कुछ अच्छा सोचता हूँ, वह फलीभूत हो जाता है।
> -तम्बाकू की लत का छूटना।
> -योग निद्रा के साथ गहरी सुखभरी नींद सोता हूँ। ये सब बदलाव गुरु कृपा से आये।

मुझे विश्वास हो गया कि कोई शक्ति जरूर है जिनकी वजह से मुझे मानसिक शांति मिली। भीतर से बहुत अच्छा लगने लगा। उसके बाद मैं संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान करने लगा।

ध्यान के दौरान कई तरह के अनुभव होने लगे। कभी-कभार ध्यान में तंद्रा (योग निंद्रा) लग जाती थी एवं खूब मानसिक शांति मिलती थी। धीरे-धीरे मेरा नशा कम होने लगा एवं दर्द कम हो गया। मोबाईल से दीक्षा लेने के 3-4 महीने पश्चात् पहली बार आश्रम गया, वहाँ पर ध्यान के दौरान असीम शांति प्राप्त हुई, मन हल्का हो गया, शरीर का वजन भी पहले से कम हो गया। और मैं मेरा लेथ मशीन का काम ज्यादा स्फूर्ति एवं ताकत से करने लगा, काम के दौरान होने वाली थकान गुरुदेव का ध्यान करने से ही दूर हो जाती है। मन में जो कुछ अच्छा सोचता हूँ, वैसा हो जाता है। यह मेरा गुरुदेव से जुड़ने का सौभाग्य ही है। मुझे तम्बाकु लेने की आदत भी थी, वह अब पूर्णतया छूट गई है। पहले मुझे नींद नहीं आती थी, अब बहुत गहरी नींद आती है।

मैं विश्व मानवता से अनुरोध करता हूँ कि वे एक बार गुरुदेव का ध्यान करके तो देखें, आपका नया जीवन शुरू हो जाएगा। गुरुदेव एक महान शक्ति है, वे दोनों हाथों से यह ज्ञान को लुटाने निकले हैं, जितना इस सात्विक शक्ति को लूट सकते हो, उतना लूट लो। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ। क्योंकि हमारे संतों ने कहा है कि-

तीन लोक नव खण्ड में,
गुरु ते बड़ा न कोय।
करता करै न कर सकै,
गुरु करे सो होय।।
सात समुद्र मसि करौं,
लेखनी सब वनराय।
सब धरती कागज करौं,
गुरु गुण लिख्या ना जाय।।

-जयसिंह गहलोत
पुत्र श्री पृथ्वीसिंह जी
गहलोतों का वास,
मगरा-पूँजला, मण्डोर,
जोधपुर (राज.)

www.the-comforter.org

तारणकर्ता सद्गुरुदेव

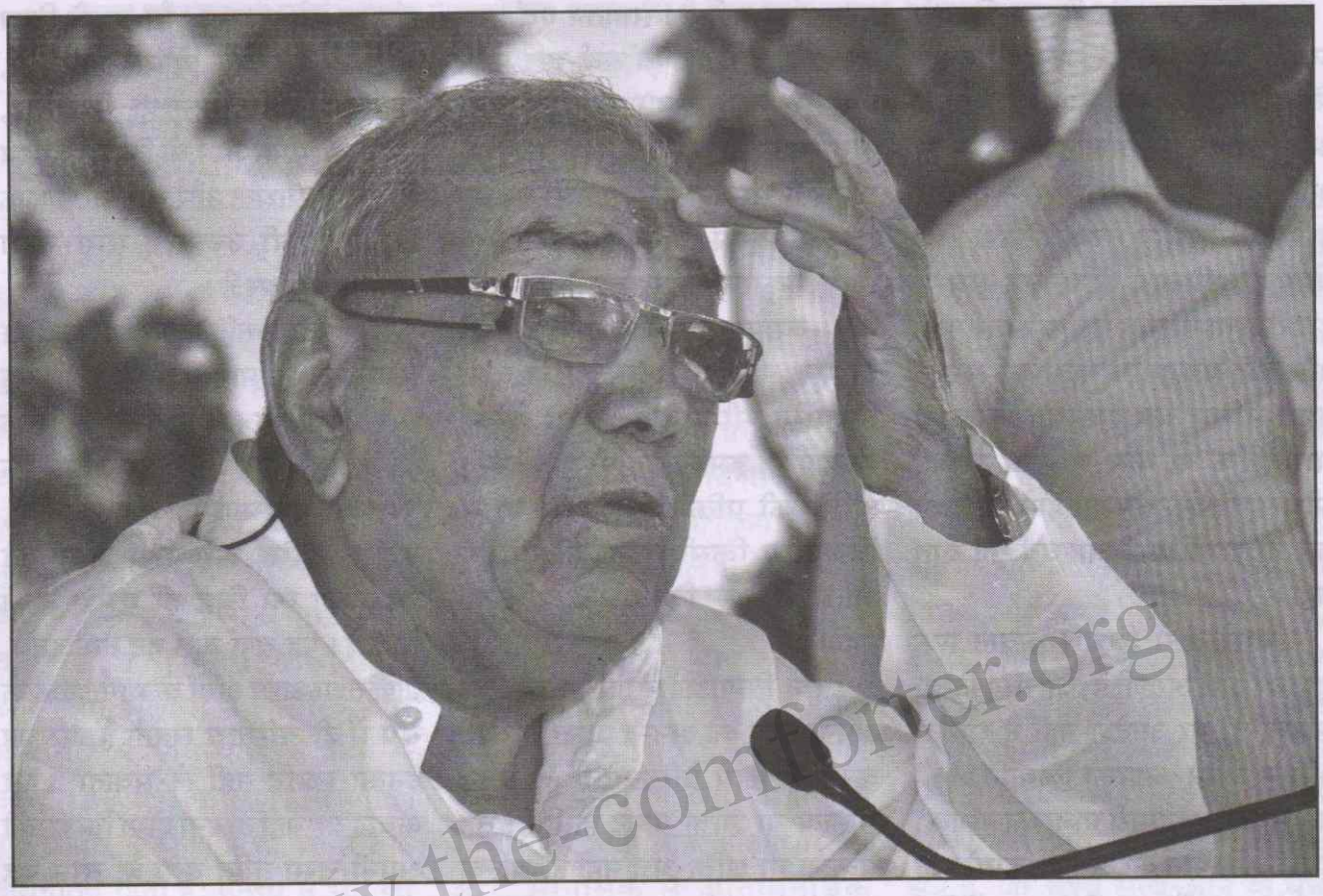

www.the-comforter.org

कुलं धनं बलं शास्त्रं बान्धवास्सोदरा इमे।
मरणे नोपयुज्यन्ते गुरुरेको हि तारकः।। श्री गुरु गीता-188।।

अनुवादः- अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार व भाई ये सब मृत्यु के अवसर पर कुछ काम नहीं आते। एकमात्र गुरुदेव ही उस समय तारणहार हैं।

व्याख्याः- सांसारिक व्यक्तियों से कितना ही सम्पर्क साधो, कितना ही धन एकत्र करो, कितनी ही शक्ति अर्जित करो, कितना ही मान-सम्मान, प्रशंसा प्राप्त करो, कितने ही शास्त्र पढ़कर अपने पांडित्य का प्रदर्शन करो, नाते-रिश्तेदारों से कितना ही मेल-जोल बढ़ाओ, भाइयों से भी कितना ही अच्छा संबंध रखो किन्तु जब मृत्यु का समय आता है तो ये कुछ भी सहायता नहीं कर सकते।

अगली यात्रा तो स्वयं को अकेले ही तय करनी पड़ती है। उस समय केवल गुरु का ज्ञान ही सहायक होता है जिसके सहारे मनुष्य इस संसार सागर से पार होकर अपनी अगली यात्रा पर निकलता है तथा सद्गुरु के प्रसाद से ही उसे मुक्ति लाभ मिलता है। अतः गुरु ही वह तारणकर्ता है, जिससे उसका साथ नहीं छोड़ना चाहिए। उसे बचाने वाला अन्य कोई नहीं हैं। इसलिए कहा है कि 'श्री गुरु कृपा ही केवलम्, शिष्यस्य परम मंगलम्' अर्थात् गुरु ही कृपा ही शिष्य के लिए परम मंगलकारी है। ❖❖❖

गतांक से आगे...

ज्ञान का लक्ष्य

-महर्षि श्री अरविन्द

ज्ञान-संग्रह और विचार-विमर्श, ध्यान, स्थिर चिन्तन, मन की अपने विषय पर तन्मयतापूर्ण एकाग्रता-रूपी अपने व्यापारों से, अर्थात् श्रवण, मनन और निदिध्यासन से सम्पन्न विचार हमारे अन्वेषणीय तत्त्व की उपलब्धि के एक अनिवार्य साधन के रूप में हमारी सत्ता में उच्च पद पर आसीन है, और यदि यह हमारी यात्रा का अग्रणी तथा मन्दिर का एकमात्र उपलभ्य मार्गदर्शक या कम-से-कम उसका सीधा एवं अन्तरतम् द्वार होने का दावा करे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

वास्तव में विचार केवल एक गुप्तचर और अग्रणी है; वह मार्ग दिखा सकता है, पर आदेश नहीं दे सकता और न अपने-आपको क्रियान्वित ही कर सकता है। हमारी यात्रा का नायक, हमारे अभियान का अग्रणी, हमारे यज्ञ का प्रथम और प्राचीनतम पुरोहित संकल्प है। यह संकल्प न तो हृदय की वह इच्छा है और न मन की वह माँग या अभिरुचि है जिसे हम बहुधा ही यह नाम दिया करते हैं। यह तो हमारी सत्ता की और सत्तामात्र की वह अन्तरतम, प्रबल तथा प्रायः ही आवृत चेतन-शक्ति है, तपस्, शक्ति, श्रद्धा है जो प्रभुत्वशाली रूप में हमारी दिशा का निर्धारण करती है और बुद्धि तथा हृदय जिसके न्यूनाधिक अन्ध एवं स्वयंचालित सेवक और यन्त्र हैं। परम आत्मा, जो निश्चल एवं शान्त है तथा वस्तुओं एवं घटनाओं से शून्य है, सत्ता का आश्रय तथा पृष्ठाधार है, एक परम तत्त्व की नीरव प्रणालिका का या उसका मूल द्रव्य है: वह स्वयं एकमात्र पूर्ण-वास्तविक सत्ता नहीं है, स्वयं परम तत्त्व नहीं है। सनातन एवं परम तत्त्व तो परमेश्वर एवं सर्व-मूल पुरुष है। सब कार्य-व्यापारों के ऊपर अवस्थित रहता हुआ तथा उनमें से किसी से भी बद्ध न होता हुआ वह उन सबका उद्गम, अनुमन्ता, उपादान, निमित्त कारण तथा स्वामी है। सभी कार्य-व्यापार इस परम आत्मा से ही उद्भूत होते हैं तथा इसीके द्वारा निर्धारित भी होते हैं; सभी इसकी क्रियाएँ हैं, इसकी अपनी ही चिन्मय शक्ति की प्रक्रियाएँ हैं, आत्मा से विजातीय किसी वस्तु की या इस आत्मा से भिन्न किसी अन्य शक्ति की नहीं।

इन क्रियाओं में आत्मा का, जो अपनी सत्ता को अनन्त प्रकार से व्यक्त करने के लिये प्रेरित होती है, चेतन संकल्प या शक्ति प्रकट होती है; वह संकल्प या शक्ति अज्ञ नहीं है, बल्कि अपने स्वरूप के तथा उस सबके ज्ञान के साथ, जिसे प्रकट करने के लिये वह प्रयोग में लायी जाती है, एकीभूत है।

हमारे अन्दर का गुह्य आध्यात्मिक संकल्प एवं आन्तरात्मिक श्रद्धा, हमारी प्रकृति का प्रमुख गुप्त बल, इस शक्ति का ही एक वैयक्तिक यन्त्र है जो 'परम के साथ अधिक निकट सम्पर्क रखता है; यदि एक बार हम उसे उपलब्ध और अधिकृत कर सकें तो हमें पता चलेगा कि वह हमारा एक अधिक सुनिश्चित मार्गदर्शक और प्रकाश प्रदाता है, क्योंकि वह हमारी विचार-शक्तियों की ऊपरी क्रियाओं की अपेक्षा अधिक गंभीर है तथा 'एकं सत्' एवं 'निरपेक्ष' के अधिक घनिष्ठतया निकट है।

अपने में तथा विश्व में उस संकल्प को जानना और उसके दिव्य चरम परिणामों तक, ये चाहे जो भी हों, उसका अनुसरण करना ही, निःसन्देह, कर्मों की भांति ज्ञान के लिये भी तथा जीवन के साधक और योग के साधक के लिये भी उच्चतम मार्ग तथा सत्यतम शिखर है।

विचार प्रकृति का सबसे उच्च या सबसे सबल भाग नहीं है, न ही यह सत्य का एकमात्र या गंभीरतम निर्देशक है। अतएव, इसे अपनी ही ऐकान्तिक तृप्ति का अनुसरण नहीं करना चाहिये, न उस तृप्ति को परम ज्ञान की उपलब्धि का चिह्न ही समझ लेना चाहिये। यह यहां कुछ हद तक हृदय, प्राण तथा अन्य अंगों के मार्गदर्शक के रूप में ही अस्तित्व रखता है, पर यह उनका स्थान नहीं ले सकता, इसे केवल यह नहीं देखना होगा कि इसकी अपनी चरम तृप्ति क्या है, वरन् यह भी कि क्या कोई ऐसी चरम तृप्ति नहीं है जो इन अन्य अंगों के लिये भी अभिप्रेत हो।

अमूर्त विचार का एकांगी मार्ग तभी उचित सिद्ध होगा यदि विश्व में परम संकल्प का उद्देश्य केवल अज्ञान की क्रिया में एक ऐसा अवरोहण करना ही हो, जिसे मन एक अन्धताजनक यन्त्र एवं जेलर के रूप में मिथ्या विचार और संवेदन के द्वारा साधित करता है, साथ ही यदि उसका उद्देश्य ज्ञान की निश्चलता में एक ऐसा आरोहण करना भी हो जिसे मन उसी प्रकार यथार्थ विचार के द्वारा, पर उसे एक आलोकप्रद यन्त्र एवं उद्धारक बनाकर, सम्पन्न करता है।

संदर्भ-'योग समन्वय'
पुस्तक पृष्ठ-289

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

परंतु मनुष्य में व्यक्तित्व का चैत्य भाग निम्नतर सृष्टि की अपेक्षा बहुत अधिक तेजी के साथ विकसित होने योग्य होता है और एक समय आ सकता है कि आंतरात्मिक सत्ता उस बिन्दु के नजदीक पहुँच जाये, जहाँ वह पर्दे के पीछे से निकलकर खुले में आ जाये और प्रकृति में उसके यंत्र-विन्यास की स्वामी बन जाये।

ये सब ऐसे निष्कर्ष हैं जिन तक हम प्रकृति की प्रगति के बाहरी व्यापारों, भौतिक जन्म और शरीर में चेतना के और उसकी सत्ता के बाहरी सतह के विकास के अवलोकन द्वारा भी पहुँच सकते हैं।

लेकिन दूसरा अदृश्य तत्त्व भी है, पुनर्जन्म होता है, विकसनशील अस्तित्व की एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी तक चढाई द्वारा अंतरात्मा की प्रगति और स्वयं श्रेणियों में शारीरिक और मानसिक यंत्र-विन्यास के उच्च से उच्चतर प्ररूपों में आरोहण द्वारा प्रगति। इस प्रगति में चैत्य सत्ता अभी तक अवगुंठित रहती है; मनुष्य में भी, जो सचेतन मानसिक सत्ता है, वह अपने यंत्रों, मन, प्राण और शरीर द्वारा अवगुंठित रहती है।

वह पूरी तरह अभिव्यक्त होने में अक्षम रहती है, सामने आने से रोकी जाती है, जहाँ वह अपनी प्रकृति के स्वामी के रूप में खड़ी हो सकती है; अपने यंत्रों के अमुक निर्धारण के आगे झुकने के लिये बाधित होती है, प्रकृति द्वारा पुरुष पर आधिपत्य को मानने के लिये बाधित होती है।

परंतु मनुष्य में व्यक्तित्व का चैत्य भाग निम्नतर सृष्टि की अपेक्षा बहुत अधिक तेजी के साथ विकसित होने योग्य होता है और एक समय आ सकता है कि आंतरात्मिक सत्ता उस बिन्दु के नजदीक पहुँच जाये, जहाँ वह पर्दे के पीछे से निकलकर खुले में आ जाये और प्रकृति में उसके यंत्र-विन्यास की स्वामी बन जाये।

लेकिन इसका अर्थ होगा कि गुप्त अंतर्वासी पुरुष, अंतस्थ प्रेरक आत्मा, अंतस्थ ईश्वर का आविर्भाव हो तो उसकी माँग एक अधिक दिव्य, अधिक अध्यात्म जीवन के लिये होगी, जैसी कि वह स्वयं मन में तब होती है जब वह आंतरिक चैत्य प्रभाव तले आता है। पार्थिव जीवन की प्रकृति में, जहाँ मन अज्ञान का यंत्र है, यह केवल चेतना के परिवर्तन द्वारा, अज्ञान के आधार की जगह ज्ञान के आधार की ओर, मानसिक से अतिमानसिक चेतना की ओर, प्रकृति के अतिमानसिक यंत्र-विन्यास की ओर संक्रमण से ही हो सकता है।

इस युक्ति में कोई निर्णायक बल नहीं है कि चूंकि यह अज्ञान का जगत् है इसलिये इस प्रकार का रूपांतर परे के स्वर्ग में ही हो सकता है या बिलकुल नहीं हो सकता और चैत्य सत्ता की माँग अपने-आपमें अज्ञानमय है और उसका स्थान अंतरात्मा के निरपेक्ष में मिल जाने को लेना चाहिये। यह निष्कर्ष तभी पूरी तरह से प्रामाणिक हो सकता था यदि अज्ञान ही जगत् की अभिव्यक्ति का संपूर्ण अर्थ, उपादान और बल होता या स्वयं जगत्-प्रकृति में ऐसा कोई तत्त्व न होता जिसके द्वारा उस अज्ञानमय मानसिकता का अतिक्रमण हो पाता जो अभी तक हमारी सत्ता की वर्तमान स्थिति को भाराक्रांत किये हुए है। लेकिन अज्ञान तो इस जगत्-प्रकृति का एक अंश मात्र है, वह उसका सब कुछ नहीं है, आद्या शक्ति या स्रष्टा नहीं है।

अपने उच्चतर उत्स में वह अपने-आपको सीमित करनेवाला ज्ञान है और अपने निचले मूल में भी, उसका शुद्ध जड़ निश्चेतना में से आविर्भाव, वह एक दबाई हुई चेतना है, जो फिर से अपने-आपको पाने के लिये, उस ज्ञान को सत्ता के आधार के वैश्व मन में हमारी मानसिकता के ऊँचे क्षेत्र हैं, जो वैश्व सत्य-ज्ञान के यंत्र हैं और निश्चय ही मानसिक सत्ता इनमें अवश्य उठ सकती है क्योंकि अब भी वह इनमें अति साधारण अवस्थाओं में उठती है या अभीतक उन्हें जाने या उनपर अधिकार किये बिना, उनसे अंतर्भास, आध्यात्मिक प्रेरणाएँ, प्रबोध या आध्यात्मिक क्षमता की बाढ़ आती रहती है।

ये सब क्षेत्र अपने से परे के बारे में सचेतन हैं और उनमें से जो उच्चतम है, वह अतिमानस की ओर प्रत्यक्ष रूप से खुला है, उस सत्य-चेतना से अभिज्ञ है जो उसका अतिक्रमण करती है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

भगवान् की अवतरण-प्रणाली

इस आंतरिक और बाह्य सिद्धि को प्राप्त करने में कोई प्रधानता, भागवत गुण की कोई महत्तर शक्ति, कोई कारगर ताकत ही विभूति का लक्षण है। मानव विभूति भागवत सिद्धि प्राप्त करने के लिए मानव-जाति के संघर्ष का अग्रणी नेता होता है-कार्लाइल के अनुसार मनुष्यों के अन्दर एक भागवत शक्तिहोती हैं।

''वृष्णियों मे मैं वासुदेव (श्रीकृष्ण) हूँ, पांडवों में धनंजय (अर्जुन) हूँ, मुनियों में व्यास और कवियों में उशना कवि हूँ'', अर्थात् प्रत्येक कोटि या कक्षा में सर्वोत्तम, प्रत्येक समूह में सबसे महान्, ज़िन-जिन गुणों और कर्मों के द्वारा उस समूह की विशिष्ट आत्मशक्ति प्रकट होती है, उन गुणों और कर्मों का प्रकाश जिसके द्वारा सर्वोत्तम रूप से प्रकट होता है, वह ईश्वर की विभूति है। जीव की शक्तियों का यह उत्कर्ष भागवत प्राकट्य के क्रम में अत्यंत आवश्यक है।

कोई भी महान् पुरुष जो हमारी औसत कक्षा के ऊपर उठ जाता है, वह अपने उस कर्म से साधारण मानव-जाति को ऊपर उठा देता है; वह हमारी भागवत संभावनाओं का एक सजीव आश्वासन, परमेश्वर की एक प्रतिश्रुति और भागवत प्रकाश की एक प्रभा तथा भागवत शक्ति का एक उच्छ्वास होता है।

मनुष्यों में महामनस्वी और वीर पुरुषों को देवता की तरह पूजने की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, उसके मूल में यही सत्य है। भारतवासियों का मन तो सभी बड़े-बड़े संत-महात्माओं, आचार्यों और पंथ-प्रवर्तकों को अनायास ही आंशिक अवतार मान लेने में अभ्यस्त है और दक्षिण के वैष्णव तो अपने कुछ संतों को भगवान् विष्णु के प्रतीकात्मक सचेतन शस्त्रों के अवतार मानते हैं, क्योंकि सचमुच महान् आत्माएँ भगवान् की सचेतन शक्तियाँ और शस्त्र ही तो हैं, जिनसे ऊपर की ओर आगे बढ़ने और विघ्न-बाधाओं से संग्राम करने का काम लिया जाता है। यह विचार जीवन के बारे में हर रहस्यवादी या आध्यात्मिक दृष्टि के लिए--जो भागवत सत्ता और प्रकृति तथा मानवसत्ता और प्रकृति के बीच

अमिट रेखा नहीं खींचती--सहज और अपरिहार्य है-यह मानवता में भगवान का बोध है।

परन्तु फिर भी विभूति अवतार नहीं है; यदि विभूति और अवतार एक ही होते तो अर्जुन, व्यास, उशना सब वैसे ही अवतार होते जैसे श्रीकृष्ण थे, चाहे उनमें अवतारपन की शक्ति इनसे कुछ कम ही होती। परन्तु दिव्य गुण का होना ही पर्याप्त नहीं है; अवतार होना तो तब कहा जा सकता है जब कि अपने परमेश्वर और परमात्मा होने का आंतरिक ज्ञान हो और यह ज्ञान हो कि हम अपनी भागवत सत्ता से मानव-प्रकृति का शासन कर रहे हैं। गुणों की शक्ति का उत्कर्ष संभूति (भूतग्राम) का अंश है, सामान्य अभिव्यक्ति में यह ऊर्ध्व की ओर आरोहण है। पर अवतार में एक विशेष अभिव्यक्ति होती है, यह दिव्य जन्म ऊपर से होता है, सनातन विश्वव्यापक विश्वेश्वर व्यष्टिगत मानवता के एक आकार में उतर आते हैं 'आत्मानं सृजामि' और वे केवल परदे के अन्दर ही अपने स्वरूप से सचेतन नहीं रहते, बल्कि बाह्य प्रकृति में भी उन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान रहता है।

एक मध्यस्थ विचार भी है, अवतार के बारे में एक अधिक रहस्यमय दृष्टि है जिसके अनुसार मानव-आत्मा अपने अन्दर भगवान् का आह्वान करके यह अवतरण कराती है और तब वह भागवत चैतन्य के अधिकार में हो जाती है अथवा उसका प्रभावशाली प्रतिबिंब या माध्यम बन जाती है। यह विचार किन्हीं आध्यात्मिक अनुभवों के सत्य पर अवलंबित है।

यह मनुष्य में भागवत जन्म, अर्थात् मनुष्य का आरोहण, मानव-चैतन्य का भागवत चैतन्य में संवर्धन है और पृथक् आत्मा का भागवत चैतन्य में लय हो जाना ही इसकी परिणति है। आत्मा अपने व्यष्टिभाव को अनन्त और विश्वव्यापक सत्ता में मिला देती या परात्पर सत्ता की परा स्थिति में खो देती है; वह विराट् आत्मा के साथ, ब्रह्म के साथ, भगवान् के साथ एक हो जाती है अथवा जैसा कि प्रायः और भी अधिक निश्चित रूप से कहा जाता है---वह स्वयं ही एकमेवाद्वितीय आत्मा, ब्रह्म, भगवान् बन जाती है।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित
'गीता प्रबंध' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

मानव तन्त्र में प्रतिभा को स्थापित करने के लिये प्रकृति उस तन्त्रको आंशिक रूप से तोड़ने और उसमें गड़बड़ पैदा करने के लिये बाधित होती है क्योंकि वह उसमें एक ऐसे तत्व को प्रविष्ट कर रही है जो उस जाति के लिये पराया और उससे श्रेष्ठ है और उसे अधिक समृद्ध बनाता है। प्रतिभा उस नूतन और दिव्य तत्त्व का पूर्ण विकास नहीं है। यह केवल उसका आरम्भ या अपने उच्चतम रूप में किन्हीं दिशाओं में उसका उपगमन है। वह कुछ अव्यवस्थित मानव मन, प्राणिक स्नायविकता, भौतिक पशुता की बृहत् राशि में अनिश्चित, मनमौजी ढंग से काम करती है। वस्तुतः अपने-आप में वह दिव्य है। केवल वह सांचा अदिव्य है जिसमें वह काम करती है। उसमें आत्मसात् न होनेवाली शक्ति, जो उसमें काम करती है, उसे तोड़-फोडकर उस पर हल चला देती है। कभी कभी दिव्य घुसपैठियों में कोई ऐसा तत्त्व होता है जो उस सांचे पर अपना हाथ रखता और उसे सहारा देता है। इसलिये वह तोड़ा नहीं जाता, न उसमें दरारें पड़ती हैं।

अगर कोई गड़बड़ होती भी है तो जरा-सी, नगण्य। इस तरह का तत्त्व सीजर में था, शेक्सपीयर में था, गेटे में था। कभी ऐसी शक्ति प्रकट होती है जिसके लिये हम जो भी परिभाषा लगायें वह निराशाजनक रूप से अपर्याप्त होती है और जिसके लिये हम प्रतिभा की व्याख्या लागु नहीं कर सकते। तब जिनमें देखने वाली आँखें होती हैं, वे नमन् करते और उसे अवतार स्वीकार कर लेते हैं। क्योंकि वह अवतार का काम है कि ऐसी चीज का आंशिक या पूर्ण रूप में प्ररूप बने जिसे प्रकृति ने अभी तक जनसमूह में या व्यक्ति में भी चरितार्थ नहीं किया है ताकि उसका गुजरना उस भौतिक आकाश में छाप लगा जाय, जिसमें हम रहते हैं।

लेकिन यह कौन सा प्ररूप है जिसके लिये दिव्य जननी प्रसूति में हैं।

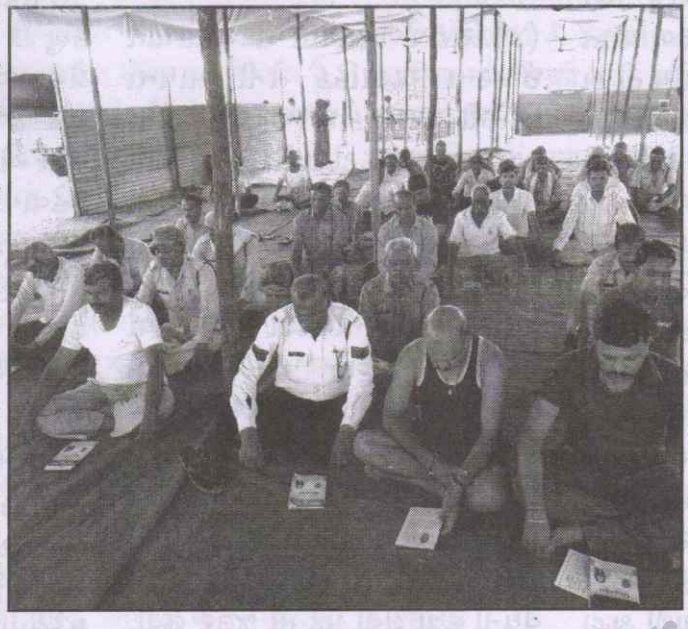

इस दीर्घ और महान् प्रसव की पीड़ाओं और चीत्कारों से किसका जन्म होगा? कहा जा सकता है-एक ज्यादा महान् प्रकार की मानव जाति का। लेकिन हम जो बात कह रहे हैं, उसे समझने के लिये, हमें स्पष्ट रूप से यह जानना होगा कि यह मानव जाति है क्या जिसका वह अतिक्रमण करना चाहती है? मानव प्रतीक या वह प्ररूप जो हम है वह मानसिक अंहकारवाली मानसिक सत्ता है जो मन के द्वारा हमेशा एक प्राणिक आवरण में लेकिन भौतिक द्रव्य पर, भौतिक द्रव्य द्वारा काम करती है। वह अपने निम्नतर यंत्रों के कारण अपनी उच्चतर क्रियाओं में सीमित रहती है। उसका मानसिक आधार अंहकारमय, संवेदनात्मक अनुभवों और परिवेश द्वारा निश्चित होता है। अतः उसका ज्ञान निश्चित और अपर्याप्त क्षेत्र के विस्तृत या संकीर्ण चक्करों का अनुसरण करता है। इसी तरह उसका नैतिक स्वभाव और कर्म भी अहंकारमय होते हैं। संवदेनात्मक, अनुभव-जन्य और परिवेश द्वारा निश्चित होते हैं। इस कारण वह (प्ररूप) भी समान रूप से पाप-पुण्य से बंधा रहता है, और जाति को अहंकारमय प्रकृति की सीमाओं में बनाने के सभी प्रयास असफल रहे हैं और किन्हीं विशिष्ट सुधारों के बावजूद, बड़ी असफलता में समाप्त होते हैं। यह केवल मिश्रित नहीं बल्कि अस्तव्यस्त प्ररूप जिसमें शरीर और प्राण मन में हस्तक्षेप करते हैं और मन शरीर और प्राण में अड़ंगा लगाता और वे भी इसमें अड़ंगा लगाते हैं।

उसकी इन्द्रिय सम्पर्क पर आधारित ज्ञान की खोज ऐसी है जैसे रात के समय कोई मनुष्य जंगल में अपना रास्ता टटोले। वह अपने इर्द-गिर्द की चीजों को छूकर, उनसे टकराकर या उन पर ठोकरें खाकर परिचय कर लेता है, यद्यपि उसे तर्क-बुद्धि की अनिश्चित रोशनी दी गयी है जो एक अंश में उसकी असमर्थता की कमी को पूरा करती है लेकिन चूँकी तर्क-बुद्धि को भी इन्द्रियों से ही आरंभ करना होता है जो सदा मूल्यों को मिथ्या करती रहती है इसलिये तर्क-बुद्धि का ज्ञान केवल सीमित ही नहीं होता बल्कि उसके साथ बहुत धुँधलापन और अनिश्चितयाँ वहाँ भी लगी रहती हैं, जहाँ वह समझता है कि चीज उसकी पकड़ में है।

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીદ્દૈહન્ન નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઇએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઇ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૅાકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૅાકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો ર્સતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના ર્સતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો ર્સતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઇ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઇ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૅાકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૅાકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઇ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછી ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव हैं, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

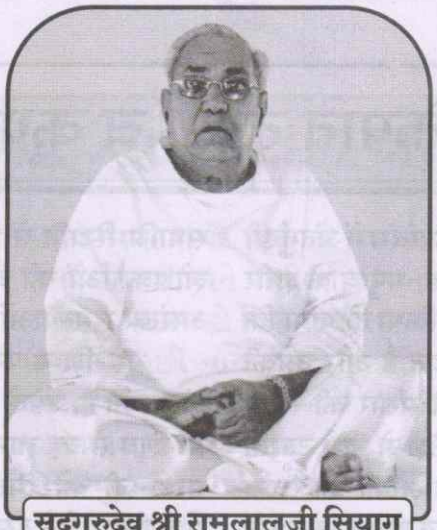

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tongue**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, it will stop and you will come back in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कोटा में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया
पूजा अर्चना के बाद साधकों ने किया ध्यान

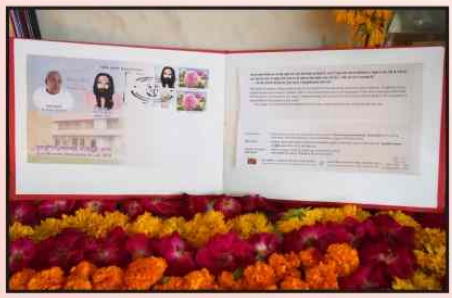

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-बाड़मेर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16-7-2019 को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी